ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

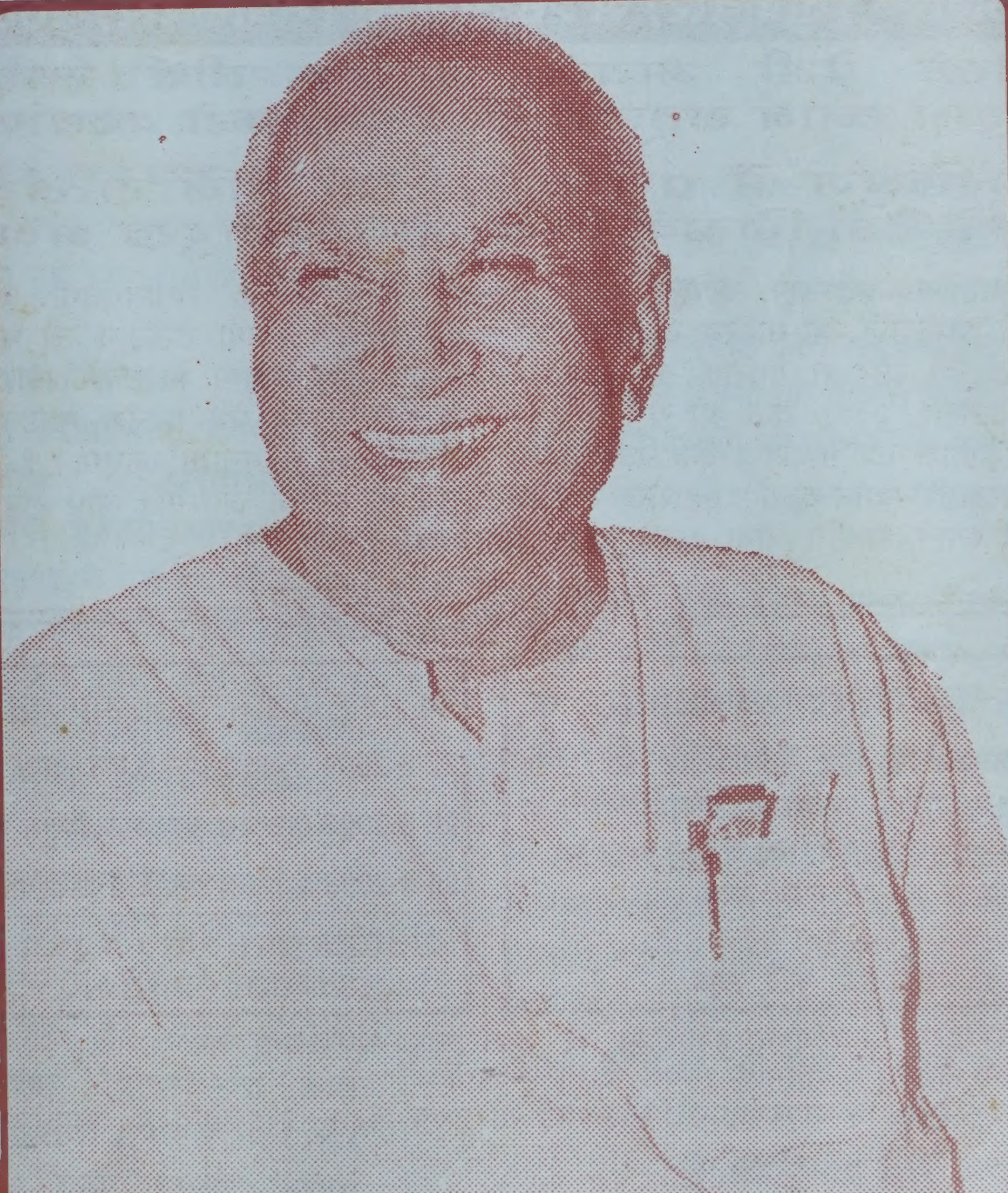
15 मई 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 7

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज
पावन प्राकट्य दिवस 16 मई 2003 शुक्रवार

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

नमः टेऊँरामाय — ॐ श्री सत्नाम साक्षी — नमः सर्वानन्दाय

महाकुम्भ पर्व

नासिक त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ क्षेत्र में
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का अन्न क्षेत्र (छावनी)

5 अगस्त (मंगलवार) से 27 अगस्त (बुधवार) 2003 तक

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
का 107 वाँ जन्मोत्सव

22 अगस्त (शुक्रवार) से 26 अगस्त (मंगलवार) 2003 तक

देखो प्रेमी आयके, नासिक तीर्थ स्थान।
कुम्भ स्नान सत्संग से, अपना करो कल्याण।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कहे टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुख भंग।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातनधर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से नासिक त्र्यम्बकेश्वर तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ मेला मंगलवार ५ अगस्त से बुधवार २७ अगस्त, २००३ तक श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस बीच हरिद्वार का सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव भी मनाया जायेगा। आप सब इस महाकुम्भ पर्व में आकर स्नान, सत्संग, सेवा करके मानव जीवन को कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

मुख्य स्नान तिथि एवं कार्यक्रम

5-8-2003	मंगलवार	प्रातः प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र आरंभ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवत गीता का पाठ प्रारम्भ, हवन व ध्वजा वन्दन
8-8-2003	शुक्रवार	एकादशी मुखय स्नान
12-8-2003	मंगलवार	पूर्णिमा मुख्य स्नान
27-8-2003	बुधवार	अमावस्या मुख्य स्नान

सत्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव का कार्यक्रम

22-8-2003	शुक्रवार	मेले के पाठ आरम्भ, हवन व सत्संग
26-8-2003	मंगलवार	प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग
26-8-2003	मंगलवार	सायंकाल पल्लव पाकर उत्सव का समापन

प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 व सांय 5 से 8 सत्संग एवं प्रातः - सांय भण्डारा होगा।

नोट : 1. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च एवं छाता जरुर लावें।
2. सोना–गहना व कीमती सामान साथ न लावें।
3. कोई भी माता–बहन अपने पिता, भाई या पुरुष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें।

सेवा में :

प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर–302001
फोन : 0141-2372423, 2372424

पता :
अमरापुर धाम, *ढिंढोरी रोड, पंचवटी नाका*
महालक्ष्मी सिनेमा के पास, नासिक
फोन : 0253-2513415

फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

महिमा

सद्गुरु हरिदासराम श्लोकाष्टक

धर्मध्वजा रक्षण तत्पराय
लोकोपकारार्थ समर्पिताय।
सत्संग - करणेऽतिधुरंधराय
नमः हरिदास गुरुवराय।।१।।

धर्म ध्वजा की रक्षा में तत्पर लोक (संसार) या लोगों के उपकार के लिए समर्पित, सत्संग करने में धुरन्धर श्री हरिदासराम जी को प्रणाम है।

शास्त्राण्यधीत्य सकलानि गुरुपदेशम्
श्रुत्वा निधाय मनसि तपसा रराज।
त्यक्त्वखिलं जगन् मोहकरं विनाशीं
वासं चकार भूवि श्री हरिदासरामः।।२।।

सभी शास्त्रों को अच्छी प्रकार पढ़कर, गुरु के उपदेश को सुन और उसे मन में धारण करके तपस्या से देदीप्यमान हो गये और इस सारे संसार को मोह का कारण और विनाशशील मानते हुये इसे छोड़कर विरक्त भाव से भूमि पर निवास किया।

मोहान्धकारे पतितान् नरान् सः
अज्ञानदुः खोपहतान् दयार्हान्।
उद्धर्तुकामः हरिदासरामः
गीतोपदेशं भृशमाचचार।।३।।

मोह रूपी अन्धकार में पड़े हुये और अज्ञान तथा दुःख से पीड़ित, दया के योग्य सांसारिक लोगों के उद्धार के लिए गीता का बार–बार रहस्य और उपदेश सुनाया।

वेदान्त सांख्यादिनि दर्शनानि
गीता समेतं सद्ग्रन्थमुख्यान्।
स्थित्वा गुरोः पादतरोः समीपे
सोऽध्यैष्ट पूज्यः हरिदासरामः।।४।।

वेदान्त, सांख्य, योग आदि दर्शनो को तथा गीता रामायण आदि मुख्य ग्रन्थों का गुरू के चरण रूपी वृक्ष के नीचे बैठकर बहुत अभ्यास और अध्ययन किया।

कामादिषट् शुत्रजिताय तस्मै
दिव्यस्वरूपाय जितेन्द्रियाय।
सदा जपे तत्परमानसाय
नमः हरिदास गुरुवराय ।।५।।

काम क्रोध आदि छः शत्रुओं को जीतने वाले, दैवीय सम्पत्ति से संयुक्त होने के कारण, दिव्य स्वरूप वाले, इन्द्रिय विजयी, सदा जप में तत्पर मन वाले श्री हरिदासराम जी को प्रणाम हैं।

विघ्नं विना यो हि जजाप नित्यम्
एकाग्र चित्तेन गुरोश्च नाम।
चान्ते जपन् नाम विहाय लोकम्
हरिः प्रतस्थे अमरापुराय।।६।।

जो निर्विध्नतया एकाग्र चित्त होकर गुरु का नाम जपते थे तथा अन्त में उसी सिद्ध मंत्र को जपते हुये इस लोक को छोड़कर स्वर्ग लोक (देवलोक) को प्रस्थान कर गये।

अदीक्षत शिष्यगणं सिषेवे
धर्मं तथा यो हि जिगाय कामम्।
पपौ गुरुनाम रसामृतं हरि
र्दुदोह ज्ञानं सद्ग्रन्थधेनोः।।७।।

उन्होंने शिष्यों को दीक्षित किया, धर्म की सेवा की, काम (सभी मनोरथों) को जीत लिया नाम जप रूपी रसामृत का पान किया और सद्ग्रन्थ रूपी धेनु से ज्ञान रूपी दूध का दोहन किया।

सर्वानन्द गुरु मनन्य मनसानित्यं सिषेवे बुधः
पन्थास्यास्य प्रवर्तकस्य चरणे यस्य रतिः निश्चला।
सत्यं यो ह्यवलम्ब्य शास्त्रविहितांचर्चां सदाचिन्तयत्
तस्मै श्री हरिदासराम गुरवे पूज्याय देवैः नमः।।८।।

जिन्होंने अपने दीक्षा गुरु श्री सर्वानन्द जी महाराज की अनन्य मन से सेवा की, इस प्रेम प्रकाश पन्थ के प्रवर्तक सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चरण कमलों में जिनकी निश्चल (स्थिर) रति (अनुराग) थी, जो सत्य का आश्रय लेकर शास्त्र में कही गई चर्चा का सदा चिन्तन और विचार करते थे ऐसे देवों के द्वारा भी पूज्य गुरुवर श्री हरिदासराम जी महाराज को पुनः–पुनः नमस्कार है।

सुनील कुमार शर्मा, शिक्षा शास्त्री कॉलेज
शाहपुरा (जयपुर)

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पुण्य स्मृति में

असीम शक्ति का भण्डार सत्नाम साक्षी महामंत्र

प्रातः स्मरणीय परम पूज्य सत्गुरू देव आचार्य सतगुरू स्वामी **टेऊँराम** जी महाराज द्वारा अपने भक्तों के कल्याणार्थ स्वयं द्वारा प्रतिपादित सर्वमंगलकारी सर्व शक्ति मान महामंत्र सत्नाम साक्षी जिसके स्मरण करते ही करोड़ों जन्मों के कष्टों का निवारण एक पल में हो जाया करता है। इस महाशक्तिशाली मंत्र के एक–एक शब्द में स्वयं गुरू महाराज ने गूढ़ रहस्य को ढूंढ व इसकी महत्ता को जाँच परखकर एक–एक शब्द की विवेचना अपनी अमृतमयी वाणी श्री अमरापुर वाणी के भजनों द्वारा बड़े ही विस्तार पूर्वक की हुई है। यह विवेचना उन्हीं भजनों का सार रूप है जिस सत्नाम साक्षी उच्चारण से ही अन्तःकरण की शुद्धि निश्चित है उसी प्रकार यदि उन शब्दों का संक्षिप्त विवेचन किया जाये तो निश्चय ही उस महामंत्र की महत्ता समझ आती है। महामंत्र सत्नाम साक्षी में छः शब्द है १ स, २ त, ३ ना, ४ म, ५ सा, ६ क्षी। इन छः शब्दों का यदि विस्तार से विवेचन किया जाये तो बहुत युग बीत जायेंगे किन्तु संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है।

प्रथम अक्षर ''स'' से बनता है। सत्संग सतगुरू सरलता व स्वतंत्रता सर्वप्रथम सत्गुरू की शरण में जाकर जीवन को सरलतम् बना सतसंग में वृत्ति लगा इस मायारूपी संसार से स्वतंत्र रहो गुरू महाराज के शब्दों में इस प्रकार है।

सत्गुरू – हर विद्या और हर कला को सीखने के लिये गुरू की आवश्यकता होती है जो सत् की शिक्षा देता है और सत्य में स्थिर बनाकर खड़ा करता है वही सत्गुरू है।

(स्वामी हरिदासरामजी महाराज)

दूसरा शब्द है ''त्'' अर्थात् त्याग की भावना रखकर तृष्णा का परित्याग गुरू महाराज के शब्दों में त्याग इच्छा की पूर्ति से तो इच्छाऐं और भी बड़ती जायेंगी। इच्छाओं के त्याग से तृप्ति होगी जिसे तृष्णा लगी हुई है वह धनवान भी निर्धन है और जो तृप्त है वह निर्धन होते हुये भी धनवान है। **(सतगुरू स्वामी सर्वानन्दजी)**

तृष्णा – तृष्णा की दुनिया में इच्छाऐं दिल के नेत्रों को ऐसा अंधा बनाती है कि हत्या सत की समझ निकल जाती है।

(सत्गुरू स्वामी हरिदासरामजी)

तीसरा शब्द है ''ना'' अर्थात नाम का स्मरण कर नम्रता धारण करो गुरू महाराज के शब्दानुसार

नाम स्मरण – को इस प्रकार चिपक जा जैसे डूबने वाला मनुष्य तुम्हीं से चिपक जाता है यही तो दुख सागर दुनिया से पार करने वाली तुम्बी है। **(पवित्र अमरापुर वाणी के भजन से)**

नाम स्मरण से वही शक्ति होथ आती है जिसके द्वार मन को प्रत्येक उलझन और विपत्ति को झण भर में मिटाया जा सकता है।

(सतगुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी)

नम्रता – यदि चाहो कि परमात्मा तुम्हारे कार्यों का हिसाब न करे तो एक युक्ति करो भगवान के सामने खाली हाथ खड़े हो जाओ अर्थात खुद को कुछ न समझो कुछ होगा ही नहीं तो हिसाब फिर किसका हो सकेगा। **(सतगुरू स्वामी सर्वानन्दजी)**

चौथा शब्द है ''म'' अर्थात हमेशा मौन व्रत धारण कर मानवतापूर्वक रहकर मौत को याद रखना चाहिये गुरू महाराज के वचनानुसार

मौन – मैंने पूछा की परमात्मा की भाषा कौन–सी है ? उत्तर मिला मौन। यदि तुम मौन की भाषा सीखो तो परमात्मा से वार्तालाप कर सकते हो। **(सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी)**

जो बच्चा मौन है सम्बंधियों से कुछ मांगता नहीं, संबंधी उसका स्वयं ही विचार रखते हैं ऐसे जो मनुष्य मौन में रहता है परमात्मा उसकी जरूर सुनता है। **(सतगुरू स्वामी शान्ति प्रकाशजी)**

मौत सतगुरू के शब्दानुसार :–

मौत से डरता वह जो अपने आप को जीवन समझता है और मौत उससे डरती है जो अपने को मरा हुआ समझता है।

(सतगुरू हरिदासरामजी)

जबतक अपने को जीवित समझकर बैठे हो तबतक जीवन बर्बाद कर रहे हो स्वयं को मुर्दा समझकर जीयो तो जीवन के भय और शरारत से स्वतंत्र हो और तुम्हारा जीवन सफल होगा।

(सतगुरू हरिदासरामजी)

पाँचवा शब्द है ''सा'' अर्थात सारवचनों को ग्रहण कर संतोष धारण कर सेवा कर्म में लीन हो जाओ गुरू महाराज के शब्दानुसार

सभी शास्त्रों की शिक्षा का निचोड़ यह कि विचार बात और चाल को वर्तमान के अनुसार रखा जाय। **(सतगुरू हरिदासरामजी)**

बंदा दोषों से भरा पड़ा है किन्तु अपने को निर्दोष समझने जैसा अन्य कोई दोष नहीं है। **(सतगुरू भगतप्रकाशजी)**

सन्तोष – संतोष अर्थात् संतोष वह खजाना है जो गरीब को शाह बनाता है सन्तोष रहित बादशाह भी भूखा रहता है।

(सतगुरू सर्वानन्दजी)

सेवा – सेवा से तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की सेवा स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने की व उसी प्रकार प्रतिपल गुरू सेवा समाज सेवा व देश देवा में तत्पर रहना चाहिये।

छटा शब्द है ''क्षी'' अर्थात क्षणभंगुर शरीर है– गुरू महाराज ने जीवन की अन्तिम स्थिति को वहाँ स्थित कर कहा है कि जीवन रहते उपर्युक्त पाँच शब्दों में समाहित कर्म करते हुये अपना जीवन सुधारो तो तुम्हारे जीवन के सब दुःख क्लेश क्षीण हो जायेंगे और तुम परम सुख को प्राप्त करोगे नहीं तो ये शरीर क्षणभंगुर है इन्द्रियों के क्षीण होते ही तुम क्षीण हो जाओगे और कुछ भी नहीं कर पाओगे फिर पछताने के सिवा कुछ न होगा।

अर्थात **क्षी** से तात्पर्य यह कि या तो तुम सत्नाम साक्षी का जाप कर दुःखों को क्षीण करो नहीं तो ये दुःख तुम्हें क्षीण कर देंगे। यही है सत्नाम साक्षी महामंत्र की विवेचना जिसका मनन कर हम गुरू चरणों में अपने मन को स्थिर कर इस महामंत्र रूपी खवैया का सहारा लेकर संसार सागर से पार उतरने का प्रयास करे। गुरू महाराज हमें शक्ति प्रदान करें।

जयन्ती विशेष

सद्गुरू स्वामी श्री हरिदासराम

निर्मल गंगा ने हरिद्वार प्रयागराज गंगा सागर को तीर्थ बना दिया।
सद्गुरू स्वामी टेऊँराम ने स्वामी हरिदासराम को अपना स्वरूप बना दिया।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य योगीराज सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चतुर्थ उत्तराधिकारी निःस्पृह (इच्छा रहित) अनुपम त्यागी मर्यादामूर्ति निर्भरा भक्ति के रसाचार्य अवढरदानी (मुँह माँगा देने वाले) सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म सिन्ध देश के छोटे से गाँव ठोड़न में ३० मार्च १९३० को हरिभक्त श्री हीरानन्द एवं माता मोतिलबाई के घर आपका जन्म हुआ। सांसारिक रिश्तों में स्वामी सर्वानन्द जी एवं स्वामी धर्म प्रकाश जी आपके मामा लगते थे। आपके छोटे भाई संत ज्ञानप्रकाश जी अमरापुर दरबार में तबला बजाने की सेवा करते थे। आपका बचपन का नाम लालचंद था। आपका ध्यान विद्या अध्ययन एवं हरिभजन में विशेषरूप से रहा। **आपका स्पष्ट उपदेश था शास्त्रों को पढ़ने वाले कम ही भ्रमित होते हैं।** आप सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से प्रभावित हुये। **गुरू बिन गत नहीं गुरू बिन पत नहीं** को जानकर आपने स्वामी जी से गुरू दीक्षा ग्रहण की। आप गुरू के प्रति इस प्रकार से समर्पित हो गये जैसे श्री राम भगवान के चरण कमलों के प्रति भरत थे। आपने श्री अमरापुर स्थान पर निर्माण कार्यों में सेवा की, विद्यार्थियों को शास्त्रों का अध्ययन कराते थे। वर्तमान श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज, स्वामी अशोकलाल जी, स्वामी मनोहरलाल जी, स्वामी जयदेव जी आदि ने आपसे शास्त्रों का अध्ययन किया। आप साहित्य एवं उसके प्रकाशन में विशेष रूचि रखते थे। स्वामी जी के सम्पूर्ण पत्राचार का कार्य भी आप ही के द्वारा किया जाता रहा। सत्संगों में आप स्वामी जी के साथ बाजा बजाते थे। स्वामी जी के साथ आपने देश और विदेशों में बहुत भ्रमण किया। उस समय की ब्लैक एण्ड व्हाइट गूँगी पिक्चर की रिकार्डिंग भी आपके द्वारा की जाती थी। स्वामी जी के ब्रह्मलीन होने पर बड़ा ही वियोग हुआ। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के तृतीय उत्तराधिकारी सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर संत समाज के निवेदन करने पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के चतुर्थ उत्तराधिकारी बने। महामण्डलेश्वर होते हुए भी आपने भरत के समान कठोर सेवक धर्म को ही ग्रहण किया। सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की आरती श्री प्रेम प्रकाश सुग्रंथ का सिन्धी में रूपान्तरण भी आपके द्वारा कराया गया। देश विदेशों में आश्रम बनवाये। स्वामी मनोहरलाल जी, स्वामी अशोकलाल जी, स्वामी जयदेव जी एवं अन्य सन्तों ने आपके ही सानिध्य में गेरूऐ वस्त्रों को धारण किया। आपके व्यक्तिगत गुणों में निम्न गुण जगत प्रसिद्ध थे। स्पष्टवादिता, अनुशासन, प्रियता, अनुपम त्याग समय के पाबन्द, सत्य कहना, सत्य ही सुनना आपको विशेष प्रिय था। झूठे आश्वासन कभी न देना यथार्थ ज्ञान का उपदेश देना, पाखण्ड एवं आडम्बरों से हुए अर्थ का सदैव सदुपयोग, जीवन में कभी भी अपना जन्मदिन न मनाना, सद्गुरू स्वामी टेऊँराम में निश्चयात्मक विश्वास रखना, प्रेमियों को भी आचार्य की मूर्ति का ही ध्यान बताना यह सब अनन्त गुण जगत प्रसिद्ध थे। आपका आचरण ही प्रेमियों के लिये उपदेश करता था। श्री रामचरित मानस में श्री राम भगवान के जो उपदेश और आचरण दोनों से लोग लाभ प्राप्त करते हैं, इस प्रकार के ही आपके उपदेश और आचरण का पालन करके प्रेमी लाभ प्राप्त करते हैं। आपके द्वारा जो मार्ग दर्शन हुआ वह इस भव सागर से पार जाने के लिये उस प्रकार से है जैसे **चढि पिपीलिकउ लघु बिन श्रम पारहिं जाहिं** पुल पर चढ़कर परम लघु चीटियां भी सागर को पार कर जाती हैं। आपके मार्ग पर चलकर भी प्रेमी इस भव सागर से बिना श्रम के पार हो सकते हैं। आपकी महिमा समुद्र के समान है। मेरी बुद्धि तट पर खड़ी हुई अबला स्त्री के समान है।

सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज की
अन्त : प्रेरणा से निःस्तृत

सुरेश (सॉवल) प्रेम प्रकाशी,
प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

भजनामृत

तर्ज :- तोखे साईं टेऊँराम चवाँ यां शंकर जो अवतार.

थल– मुहिंजो सतगुरू सभ खाँ नियारो आहे
ऐं इश्वर जो अवतार आहे।
स्वामी हरिदासराम त प्यारो आहे।
जहिंजे मन में सदा टेऊँराम आहे।।

१. धन भाग॒ खुलिया पिता हिरानन्द जा।
धन भाग॒ खुलिया माता मोतिलबाई जा।
धन भाग॒ खुलिया ठोड़न णी गाँव जा।
धन भाग॒ खुलिया सुहिणी सिन्ध हिन्द जा।
धन सर्वा.....धन सर्वानन्द सुखकारी जा।
गुरुदेव तव्हाँजे चरनन जा।

२. गुण अवाँजा लिखी कहिड़ा लिखाँ मां।
ऐ सिक सां मां सनमान करियां।
वण वढ़े सभ कलम करण चाहियाँ।
पृथवी पूरी न पवंदी आसमान चाहियां।
रिशी मुनी.......रिशी मुनी तवाँजो जस ग॒ाईन था।
ऐ संत सभेई सराहिन था।

३. हर हंद गुरुदेव जो मान आहे।
बादशाह खाँ मथे जहिंजो शान आहे।
सरस्वती गुरुदेव जे कंठ में आ।
मिठी राम वारी मिठी वाणी आहे।
गुरुदेव वेदन......... गुरुदेव वेदन ज्याँ वेदान्ती आहे।
जहिंमें वेदन जो भि अनन्त आहे।

४. अवहाँ साखी सिरज॒णहार आहियो
या कुदरत जा करतार आहियो।
अवहाँ आद अनन्त जा स्वामी आहियो।
ऐं ज्ञानी ध्यानी गुणवान आहियो।
गुरुदेव जी.........गुरुदेव जी जोत सदा जग॒ंदी रहे।
ऐं प्रेम प्रकाशी सदा झुकंदो रहे।

रमेश राजपाल, प्रेम प्रकाशी, सूरत

★★

१. सत्गुरु जी अज॒ सिकिड़ी, द॒ाढो मनड़ो आहे उदास कयो।
याद करे जोगिनि खे पल पल नेणनि मां आहे नीर वहयो।
प्यार द॒ई जे ख्याल खसे विया, तिन ज॒हड़ो न जग॒ में बि॒यो।
दूर वञी तिन देश वसायो, मिलण तिनिसां मुश्किल थियो।
सत्गुरु जी अज॒ सिकिड़ी द॒ाढो.......... ।

२. जग॒रंत जे झूठें झंझटन खां, मन मुहिंजे खे जिन मोड़ियो।
राम मिलण जी राह बुधाए जीअ जगदीश्वर सा जोड़यो।
विषयन जे वहदण वाहून खां, हथ देहि जे पार कयो।
वाट द॒से वैराग॒नि वारी अधमन जो उद्धार कयो।
सत्गुरु जी अज॒ सिकिड़ी द॒ाढो.......... ।

३. साण हुई सा पास हमेशा हीरन मोतियून जू खाणीयूं।
दास वणी दौलत जो दर दर पे ग॒ोल्हियम राजा राणीयूं।
कुरभ सचे जी कुंजी द॒ई, जिन दिल जो खोलियो तालो
जगमग ज्योति जीअ में झलकी मन कयो जे मतवालो।
सत्गुरु जी अज॒ सिकिड़ी द॒ाढो.......... ।

४. टिन लोकन जा माल खजाना, चरणन् में चाड़िया चाहे।
सिक जी सुरकी गुरु द्रिनी जा तहिंजे मट बि॒यो को नाहे।
गफ्लत जी निंड॒ मां जग॒ायो, कन में सोंहऽम शब्द चयो।
अमरापुर जिन धाम वसायो, तिन् गुरुन् खें अज॒ दिल आहे याद कयो।
सत्गुरु जी अज॒ सिकिड़ी द॒ाढो मनड़ो आहे उदास कयो।
याद करे जोग॒िन खे पल पल नेणनि मां आहे नीर वहयो।

मीनू (श्याम), प्रेम प्रकाशी, जयपुर (राज.)

★★

तर्ज : ओ मेरे प्यारे वतन ओ मेरे बिछड़े चमन तुमपे दिल कुर्बां।

थल : ओ मुहिंजा मिठड़ा गुरु ओ मुंहिजा सच्चा गुरु
तोते दिल कुरबां, तो ते जिंद कुरबां.........

१. तो ही असांखे सेखारी गुरुअ जी बंदगी।
तुहिंजे चरननि में आहे अपर्ण असांजी जिन्दगी।
तुं नजर खां दूर थिएं ए असां बेनूर थियासीं।
छो कयई अहिड़ी दिल्लगी। ओ मुहिंजा..........

२. तुहिंजे चरननि जी रज मस्तक ते जेको लग॒ाए।
सो पापनि खे कटे ऐं भाग॒ पहिंजो थो बणाए।
तुंहिंजी मिठड़ी हुई बोली भरमनि खे हणी गोली।
विएं ज्ञान जा प्रभु अलख जग॒ाए।

ओ मुहिंजा..........

३. तुहिंजे दर्शन लाइ दुनियां नेण खणी थी निहारे।
करि असांते पहिंजी कृपा वेठा आहियूं तुहिंजे द्वारे।
बियो को दर ज॒ाणूं कान, बीठा आहियूं झोली पसारे।
असां त आहियूं सिर्फ तुहिंजे सहारे।
ओ मुहिंजा मिठिड़ा गुरू.............

श्रीमती लता सुरेश गिदवानी, अजमेर

पावन स्मरण — सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

1 एक बार की बात है स्वामी हरिदासराम जी हमारी काशी नगरी में आये हुये थे। उस समय मेरी तबीयत बहुत खराब थी मैं बहुत परेशान थी। और मैं स्वामी जी से बात करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी लेकिन जिस दिन स्वामी जी काशी से वापस जाने लगे तो मैंने सोचा कि मैं आज स्वामी जी से बात करूँगी। मैं मन्दिर गयी, स्वामी जी सो रहे थे। मैंने इन्तजार किया। जब स्वामी जी उठे तब हमारे काशी के सन्त दादा महादेव साँईं मुझे स्वामी जी के पास ले गये। मैंने बहुत हिम्मत करके स्वामी जी से अपनी बीमारी के बारे में बताया कि मैं हमेशा बीमार रहती हूँ। स्वामी जी ने कहा तुम चिन्ता मत करो हम पल्लव पायेंगे। तुम्हारे संकट दूर हो जायेंगे। स्वामी जी के सिर्फ दो शब्द बोलने से मेरे सारे संकट दूर हो गये। आज हमारे स्वामी जी हमारे बीच न होते हुये भी वो हमारे बीच में हैं। आज भी अपनी कृपा दृष्टि से कृत्य कृत्य कर रहे हैं। हम सदैव उनके बताये हुये मार्ग पर चलने को कृत संकल्प है। स्वामी जी की बातें और यादों को मन में याद करते रहेंगे। तो अपने आप ही सारी कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी। किसी ने सच ही कहा है कि सच्चे मन से गुरु की प्रार्थना करने से गुरु किसी न किसी रूप में आकर अपने भक्तों पर आई विपत्ति को दूर करते हैं।

भजन

स्वामी हरिदासराम साग़ुयो हो सुन्दर श्याम।
द्रई गीता जो पैगाम वियो सभखे जग़ाए।।

१. सनातन रस्तो सभखे ड्रेखारियो।
सच्चे धर्म जो मार्ग सभखे सेखारियो।
जपायो हर हर सभखे साखी सत्नाम।

२. सत्गुरु ही साख्यात भगवान आहे।
ड्रिसो वेद पुराण शास्त्र खे ठाहे।
सतगुरु में आहिन सभ देवी देव राम।

३. संसार असार साखी सत्नाम सारु।
सत्नाम साखीअ सां करि सच्चो प्यार।
पहिजें धर्म जो नाम वियो सभखे लखाये।

४. परम तत्व ज्ञानी परम हो विज्ञानी।
वंहवार में जाग्रत दाता हो सच्चो दानी।
महिमा तहिंजी अपारी हो साख्यात् श्याम्।।

कोमल, प्रेम प्रकाशी, काशी, वाराणसी

2 ये बात उन दिनों की है जब स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जी के ब्रह्मलीन होने पर स्वामी हरिदासराम जी को गद्दी पर बिठाया गया। तब गद्दी पर आसीन होने के बाद प्रथम चैत्र मेले की तैयारियाँ श्री अमरापुर स्थान जयपुर में हो रही थी। उन्हीं दिनों मेरी तबीयत बहुत खराब हो गई। बी.पी. हाई हो गया, मुँह, पैरों पर सूजन हो गई, साँस लेने में तकलीफ हो रही थी। अस्पताल में इलाज करवाया कोई फर्क नहीं पड़ा। खाना पीना अच्छा नहीं लग रहा था। डॉक्टरों की दवाओं से थक हारकर मैं पूज्य स्वामी जी के पास गई पर पहले उन्होंने कहा किसी वैद्य को दिखाओ। मैं कोई डॉक्टर या वैद्य नहीं हूँ। मेरी मम्मी मेरे साथ थीं। उन्होंने कहा सांईं दया करो लेकिन शायद अभी किस्मत में देर थी। हम निराश होकर आ गए।

दो दिन बाद हम फिर श्री अमरापुर आए। समाधी साहब में मथा टेककर मैं फिर मेरी मम्मी के साथ पूज्य स्वामी जी के पास गयी और बताया कि सांईं खाना, पीना अच्छा नहीं लग रहा है। मुँह पर, हाथ पैरों पर सूजन आ गई है, तब स्वामी जी ने पैरों व मुँह पर नजरें फिराकर कहा, कहाँ है सूजन कहाँ है नहीं है सूजन। मैं एक बात यहाँ कहना चाहूँगी कि महापुरुष नजरों से निहाल करते हैं यह कहावत मेरे सामने यथार्थ प्रत्यक्ष हो गई।

जब मैं नीचे आई प्रसाद डोडा चटनी लिया और खाया तो इतना अच्छा लगा कि दो–तीन बार लेकर खाया। जब मैं घर पहुँची तो खाना खाने बैठी तो बहुत दिनों के बाद भर पेट खाना खाया। सूजन तो पता नहीं कहाँ गई। ऐसा लग रहा था जैसे सूजन थी ही नहीं। मैं बिल्कुल ठीक हो गई। ऐसे महान गुरुदेव जी को मेरा शत–शत नमन। मैं तो यही चाहूँगी कि मुझे हर जन्म में अमरापुर के सन्तों का संग मिले।

पदमा (आरती भागनानी), उदयपुर

3 स्वामी हरिदास राम जी महाराज जी की महिमा तो जितनी गाई जाये उतनी थोड़ी है, उनमें जितनीसादगी और सेवाभाव था शायद ही किसी के अन्दर हो स्वामी जी ने बिल्कुल कृष्ण भगवान की तरह किया। जैसे श्री कृष्ण गोकुल छोड़कर बरसाना चले गए थे। वैसे ही हमारे भगवान ने भारत को छोड़कर विदेश में अपनी जीवन यात्रा का संवरण किया। ऐसे लगता है जैसे कल तक वो हमारे साथ थे हमारे गुरुवर आज वो हम सब को रोता बिलखता छोड़कर चले गए हम भगवान से यही प्रार्थना करते हैं। कि हमें ऐसी शक्ति दो कि हम आपके हर रूप को पहचान सकें। अब हमारे स्वामी भगत प्रकाश के रूप में आपका रूप सदा अजर, अमर रहे। सभी प्रेमियों के दिलों में लहर बनकर रहे और गर्व से कहें हम सभी प्रेम प्रकाशी है। स्वामी हरिदासराम जी सत्संग में अपने मीठे वचनों से कहते थे। कि हम अपनी संस्कृति को ही जीवन में आचरण का अंग बनायें। हमें जोश तो बहुत है, पर होश नहीं, और धर्म किसी जाति सम्प्रदाय, संस्था व आश्रम को नहीं कहते आज भी उनकी बातें हमें रूलाती हैं।

श्रीमती रूपा, प्रेम प्रकाशी, खैरथल

4 इस छोटे से मुख से हम अपने सदगुरू की लीला का व्याख्यान तो नहीं कर सकते हैं। परन्तु कोशिश जरूर कर सकते हैं। हम सब प्रेमीजनों पर गुरु महाराज की कृपा सदैव बरसती है और बरसती रहेगी। मेरे सद्गुरु स्वामी हरिदासराम महाराज की तो लीला ही अपरम्पार है। जिनका जीवन बिल्कुल सादा नीतिपुण व निरंअहकारी था। सद्गुरु की मैं इस मुख से लाख बार क्या करोड़ बार भी शुक्राने करूँ तो भी कम है। मैं सदैव सद्गुरू की आभारी रहूँगी क्योंकि सद्गुरु ने ही मुझे इस पथ का रास्ता दिखाया। जिमसें सिर्फ प्रेम ही प्रेम हैं और कुछ नहीं। मुझे तो लगता है मैंने पिछले जन्म में जरूर कोई अच्छा काम किया होगा। जिससे मुझे सद्गुरु महाराज जी के दर्शन हुये। हम सब उनकी एक झलक पाने के लिए भूखे होते हैं। और जब उनकी वो झलक प्राप्त हो जाती है। तो मानों स्वर्ग के दर्शन हो जाते हैं।

एक बार की बात है सद्गुरु महाराज काशी में अपने क़क्ष में बैठे थे शाम के ८:३० बज रहे थे। मैं उनके पास गयी और बोली स्वामीजी आप से एक प्रश्न पूछना है तो उन्होंने तुरन्त कहा हाँ पूछो। तो मैंने पूछा कि – स्वामी जी भगवान तो सबमें हैं तो हम एक ही भगवान को क्यों मानें। एक ही को अपना गुरु क्यों मानें। तो उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि धरती के अन्दर तो हर जगह पानी ही पानी हैं अगर तुम्हें कुँआ खोदना है तो एक ही जगह खोदोगे ना। इस तरह उन्होंने मुझे समझाया कि भगवान तो सब में ही हैं लेकिन विश्वास हमें एक में ही रखना चाहिए। उन्होंने मेरे प्रश्न का उत्तर देकर मेरे मन के संशय को दूर किया। ऐसे थे मेरे सद्गुरु श्री स्वामी हरिदासराम महाराज जी।

निशा, प्रेम प्रकाशी, काशी

5

स्वामी हरिदासराम थव जीअरो
रे मतां समझीं वियरो रे

प्रथम निर्गुण से लोककल्याण हेतु सगुण साकार और साकार से पुनः निर्गुण निराकार होकर स्वामी हरिदास राम जी महाराज हमारे बीच सदैव ही है इस बात की पुष्टि तब हुई जब प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर की संचालिका दादी सती को लगभग तीन बार स्वामी हरिदासराम जी महाराज के दर्शन स्वप्न में हुये। तीसरी बार स्वामी जी आश्रम में आराम कर रहे थे। उठ कर बैठे और कहा कि दादी आओ जुवारे उगाते हैं। दादी क्या देखती है कि मेला लगा हुआ है। काफी भीड़ है – इस तरह के संकेत दादी सती को हुये – वर्तमान प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज को बताए गए तो स्वामी जी ने ५ दिन का मेला लगाने की आज्ञा दी।

दादी ने स्वामी जी से कहा बिना संतो के मेला सूना लगता है सो कृपा करें संत भेजें। ताकि मेला शोभित हो। सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने तुरन्त ही द्वारकापुरी इन्दौर आश्रम के व्यवस्थापक सन्त नरेशलाल प्रेम प्रकाशी को ब्यावर जाकर मेला लगाने की आज्ञा दी। सन्त नरेशलाल ने तुरन्त गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य करके ब्यावर पहुँच दादी सती, प्रेम प्रकाश आश्रम क्रमशः नन्दनगर जवाहर नगर, तीनों स्थानों पर ˉ ।कर सुबह शाम गुरु महाराज के गुणानुवाद किए व अन्तिम दिन जयपुर से सन्त मोनूराम जी ने मण्डली सहित पधारकर प्रवचन किए। प्रेम

प्रकाश ग्रन्थ का भोग साहब व पल्लव पाकर उत्सव समाप्ति की।

विदित हो कि गुरु महाराज स्वामी हरिदास राम जी हमारे साथ ही हैं जो स्वप्न में भी दर्शन देकर जीवों को कृतार्थ करते हैं।

स्वामी हरिदासराम थव जियरो रे।
मतां समझीं वियरो रे।।

निर्मल, प्रेम प्रकाशी, इन्दौर

6 आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्री चरणों में नमन करके, प्रत्येक प्रेम प्रकाशी के हृदय में विराजित सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की हम बारम्बार वन्दना करते हैं। सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज तो प्रेम, वैराग्य, त्याग, तपस्या, गुरु भक्ति की मूरत थे। महामण्डलेश्वर होने के बावजूद उन्होंने अपने को साधारण सेवक के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं माना। उन महापुरुष के बारे में हम क्या लिखकर क्या लिखेंगे। क्या गाकर क्या गायेंगे। उनकी तो महिमा ही अपरम्पार है। शब्दों में इसे हम कभी समेट ही नहीं सकते। सिर्फ महसूस कर सकते हैं, वो भी अगर हम अधिकारी हुए तो।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने हमें इतना स्नेह दिया है कि शायद ही कभी कोई किसी को दे पाए। बचपन से लेकर आज तक उन्हीं का आधार लेकर चलती आई हूँ मैं। उन्होंने मुझे पग–पग पर सभाँला है। हर वक्त हमारे साथ हमारी ढाल बनकर खड़े रहे हैं। उन्होंने हमेशा हमें कठिनाइयों से लड़ना सिखाया, सच का सामना करना सिखाया है। जब भी मैं उन्हें चिठ्ठी लिखकर अपने हृदय की व्यथा बयान करती तो बड़े प्यार से मुझे समझाते थे। मुझे हमेशा लिखते थे "प्यारी गुड़िया पूजा" अपने गुरुबाबाजी के इन मिश्री और माखी युक्त शब्द पढ़कर मेरा मन खुशी से झूम उठता। हमेशा लिखते "खूब पढ़ाई करो" और लिखते "डर मत, हिम्मत से आगे बढ़ती चल" इन शब्दों को गइराई में अगर हम जाएं तो उनके उस अपनेपन और स्नेह के समुद्र में ही डूब जायेंगे।

जब भी मेरे सामने कोई दुविधा होती तो गुरुबाबाजी मुझे सही रास्ता दिखाते। जब भी कोई उलझन में डालता तो साँई उससे उबारते। ऐसे है हमारे सांई। इतने दुख कष्ट तकलीफों के दिन आए हमारे जीवन में पर हमेशा सांई ने हमें हिम्मत दी। मेरा तो दिल इस कल्पना मात्र से दहल जाता है कि अगर हमारे सांई न होते तो हमारा क्या हुआ होता।

पर ये सच है कि सांई हमारे साथ है और हमेशा रहेंगे। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले वे स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के रूप में थे फिर स्वामी हरिदासराम जी महाराज के रूप में और अब स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के रूप में हमारे सामने हैं, हमारे साथ हैं।

पूजा प्रेम प्रकाशी, लखनऊ

शदाणी दरबार के आठवे गद्दीसर सांई गोविन्दराम जी ब्रह्मलीन

रायपुर :- शदाणी दरबार के आठवें गद्दीसर पूज्य सांई गोविन्दराम साहब जी २३ अप्रैल को अपनी पाञ्चभौतिक देह का संवरण कर गुरुलोक को सिधारे। २४ अप्रैल को पूज्य सांई जी का अन्तिम संस्कार शदाणी दरबार परिसर में ही प्रातः ११ बजे के लगभग सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिव शान्ति आश्रम लखनऊ के सांई चाण्डूराम साहिब, प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से सन्त हरिओम प्रकाश जी सहित काफी संख्या में सन्त साधू समाज व रायपुर नगर का पूज्य बेख मण्डल के साथ हजारों की संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे। सांई गोविन्दराम जी के तेरहवें पर आपके वरिष्ठ सुपुत्र सांई युद्धिष्ठिर जी को शदाणी दरबार का नवम् गद्दीसर स्थापित किया गया।

गाँधीधाम में प्रेम प्रकाश मण्डली का गठन

गाँधीधाम श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु श्री स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की प्रथम गाँधीधाम यात्रा (२० से २२ मार्च २००३ तक) के अर्न्तगत उत्साही प्रेमियों द्वारा पूज्य सद्गुरु महाराज की अध्यक्षता व निर्देशन में प्रेम प्रकाश मण्डली गाँधीधाम का गठन किया गया। जिसमें श्री भगवानदास मोटवानी (अध्यक्ष) श्री परमानन्द जी मोतियानी (सचिव), श्री किशोर शिवनानी (सहसचिव), श्री सुरेश बदलानी (कोषाध्यक्ष) एवं श्री उमेश माखीजानी, श्री तुलसी लौंगानी, डॉ. मनु गन्धानी, श्री धर्मपाल चतुरानी, श्री टेकूमल टिलवानी को प्रबन्ध कार्यकारणी के लिये सर्वसम्मति से चुना गया।

चिन्तनीय

सत्य तीन प्रकार का – एक मेरा सच, एक तुम्हारा सच, एक वास्तविक सच। **–चीनी सन्त**

ॐ है सर्व मंत्रों की आत्मा

गीता का सूत्र है **'ओम् इति एकाक्षंर ब्रह्म।'** ओम एक ऐसा अक्षर है जो ब्रह्म स्वरूप है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ब्रह्म का वाचक, संवाहिक और ब्रह्म की पराध्वनि के रूप में ॐ सारे धर्म शास्त्रों में प्रतिष्ठित हैं। ॐ वह पराशक्ति है जो न केवल मंत्रों का सरताज है वरन् कहा तो यह जाता है। कि सारी सृष्टि इसी ॐ से व्युत्पन्न हुई है। हम सब लोग धन्य है, यह सारा प्राणी जगत धन्य है जो ॐ से निष्पन्न हुआ है। उन लोगों की सांसें संगीत और सुरभि से भरी हुई है जिनकी सांसों में ॐ का सरगम है, जिनकी श्वांस ॐ की सुवास है। ॐ से हटकर न तो इस सृष्टि का अस्तित्व है, न सारे 'धर्म' का अस्तित्व ही शेष रहता है। आखिर कोई भी 'धर्म' तो ऐसा नहीं है जिसने अपने आपको ॐ से अलग कर लिया तो धर्म की आत्मा ही मर जाएगी, अगर अध्यात्म ने स्वयं को धर्म से विच्छिन्न कर लिया तो आध्यात्म के प्राण वैसे ही तड़फने लगेंगे जैसे कि बगैर पानी के मछली तड़फा करती है। ॐ ही सृष्टि का प्राण है। ॐ तो आध्यात्म की आत्मा है।

अच्छा होगा हम ॐ के शरीर–रचना, विज्ञान को समझे, ॐ को 'एनाटॉमी' को जानें। माना कि ॐ अखण्ड है जैसे ब्रह्म अखण्ड है वैसे ही ॐ अखण्ड है। उसको खण्ड़–खण्ड नहीं किया जा सकता, फिर भी ॐ का अपना शरीर विज्ञान है। जब हम ॐ का संधि विच्छेद करते हैं तो तीन अक्षर बनते हैं। अ + ऊ + म् । इसका पहला अक्षर है – अ, फिर है – ऊ और अन्त में है – म्। वेदों का प्रारम्भ ही ॐ से होता है। संस्कृत भाषा और देव नागरी लिपि भी ॐ से ही शुरू होती है। इसका पहला अक्षर 'अ' है। और व्यंजन विभाग का अंतिम अक्षर 'म' है। जब हम 'अ' से 'म' तक पहुँचते हैं तो सारा स्वर–तंत्र और सारा व्यंजन–तन्त्र ही इसमें समाविष्ट हो जाता है। भाषा में ॐ है। बगैर इसके कोई भी भाषा जीवित नहीं रह सकती।

ॐ में तीन अक्षर है– ए, यू और एम। क्या बगैर ए के अंग्रेजी पैदा हो सकती है ? इसलिए 'ए' तो प्राण है। उसी तरह जिस तरह शरीर का प्राण आत्मा होती है। कहा तो यह भी जाता है हिन्दु धर्म के आराध्य–तत्व, ब्रह्मा, विष्णु और महेश अं, ऊ और म ही है। अगर कोई व्यक्ति अ, ऊ और म का समन्वित अनुष्ठान करता है तो वह इस बीज – मंत्र के द्वारा ब्रह्मा, विष्णु और महेश के सम्पूर्ण गुणों और उसके स्वरूप का चिन्तन, मनन और अनुष्ठान का लाभ अर्जित कर लेता है। इसलिए ॐ हिन्दुत्व का प्राण है।

–**हीरालाल भूरानी,** खैरथल

अति आवश्यक सूचना

प्रेम प्रकाश सन्देश के समस्त सम्माननीय सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता की शुल्क देय अवधि जो कि प्रत्येक मास की पत्रिका के आवरण अन्तिम पृष्ठ पर आपके पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक-रसीद क्रमांक के पश्चात् अंकित रहती है। उसे ठीक तरह से जाँच कर, सदस्यता शुल्क देय अवधि समाप्त होने के पूर्व अपना सदस्यता शुल्क हमें सीधे मनीऑर्डर द्वारा अथवा विभिन्न नगरों में हमारे सहयोगियों (प्रतिनिधियों) के पास या पूज्य गुरू महाराज जी के साथ यात्रा में चल रहे प्रेम प्रकाशी सन्त विद्यार्थियों के पास आवश्यक रूप से जमा करवाने की कृपा करें। देय शुल्क अवधि बीत जाने के एक मास के पश्चात् आपको पत्रिका भेजना बन्द कर दिया जायेगा। अतः पत्रिका की नियमित उपलब्धि के लिये आप अपना शुल्क देय अवधि से पूर्व आवश्यक रूप से जमा करवायें। मनीऑर्डर से शुल्क भेजने वाले प्रेमी कृपया मनीऑर्डर भेजने के पश्चात् एक पोस्टकार्ड भी अवश्य लिखा करें। अपने नाम पते मनीऑर्डर विवरण के साथ, क्योंकि अत्याधुनिकीकरण के चलते सेर्टलाईट के माध्यम से प्राप्त मनीऑर्डर में सन्देश वाले कॉलम खाली अपूर्ण रहते हैं। इस कारण मनीऑर्डर भेजने वाले प्रेमियों की जानकारी कार्यालय को नहीं हो पाती है।

व्यवस्थापक : प्रेम प्रकाश सन्देश ग्वालियर

साईं टेऊँराम (दोहे) अमृतवाणी

ये दोहे प्रतियोगियों को याद करके सुनाने हैं।

१. मैं मागत नहिं और कछु, संत दरस हरि देह।
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूं तन एह।।
२. सत्गुरू मुझ को दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, संतनि माहिं निवास।।
३. कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत-भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।
४. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार।
कह टेऊँ तिहं याद कर, सुमरो सतकर्तार।।
५. चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।
६. कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कार्य कर, हरि सुमरो मन माहिं।।
७. बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार।
टेऊँ बुराई करे, तांका कर उपकार।।
८. जिन-जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान।
टेऊँ तिन के कदम पर, झुक-झुक पड़त जहान।।
६. संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप।
कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप।।
१०. क्रोध त्याग क्षमा धरे, सो है पूजन योग।
कह टेऊँ तिहं दरस ते, मिट जावत सब रोग।।
११. संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं।।
१२. पार करत भव सिंधु से, सत्संग परम जहाज।
कह टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज।।
१३. कह टेऊँ भगवान से, सत्गुरू अधिक पछान।
कर्मों का फल देत हरि, गुरू दे मुक्ती दान।।
१४. गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय।।
१५. टेऊँ दीपक ज्ञान बिन, शोभत धाम न देह।
गुरु बिन ज्ञान न होत है, तांते गुरु कर लेह।।
१६. गुरु बिन प्रेम न ऊपजे, गुरु बिन जगे न भाग।
कह टेऊँ तांते सदा, गुरु चरनों में लाग।।
१७. गुरु की सेवा जो करे, गुरु की आज्ञा मान।
कह टेऊँ गुरु नाम रट, गुरुमुख सो पहचान।।
१८. सुख दुःख में त्यागे नहीं, सत्गुरु का जो संग।
कह टेऊँ तिस दास को, लगे राम का रंग।।
१६. मैं मेरा गुरु चरन में, जो जन भेंट चढ़ाय।
कह टेऊँ तिस दास के, काल निकट नहिं आय।।
२०. गुरु को जे नहिं सेवहीं, ते नर ठौर न पाय।
कह टेऊँ गुरु सेव बिन, जन्म जन्म पछताय।।
२१. राम नाम सत्य वचन पुनि, मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में, सो नर गूंगा होय।।
२२. कर माला मन ध्यान धर, रसना से रट राम।
कह टेऊँ इस जाप से, पाओ हरि का धाम।।
२३. मुख से सुमरन ना करे, कर से देहि न दान।
कह टेऊँ तिस मनुष का, जीवन वृथा जान।।
२४. भक्ति करनी कठिन है, सुगम न तांको जान।
टेऊँ भक्ती सो करे, त्यागे जो अभिमान।।
२५. मन चंचल के शान्ति हित, एक हरी का ध्यान।
टेऊँ हरि के ध्यान बिन, मिले न शान्ति सुजान।।
२६. हरिजन देखत सर्व को, एक हरी का रूप।
दुर्जन नाना दृष्टि कर, पड़त नरक के कूप।।
२७. रहनी बिन तन भेष धर, संत न कहिये सोय।
कह टेऊँ सो संत है, रहनी रहता जोय।।
२८. टेऊँ पारस और को, करत न आप समान।
साधू दीपक भृंग ज्यों, निज सम करते आन।।
२६. टेऊँ जेते कर्म शुभ, लिखे वेद के माहिं।
साधु संग गुरु नाम सम और कर्म को नाहिं।।
३०. कह टेऊँ हरि की कथा, पापिन को नहिं भाय।
निन्दा चुगली पाप नित, तांको बहुत सुहाय।।
३१. करमा कुबजा भीलनी, हाथी अरु हनुमान।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।
३२. कह टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा है अधिकाय।
प्रेम भरे परवाह में, ज्ञान ध्यान बह जाय।
३३. प्रातकाल जो सोवहीं, तां मन होय मलीन।
रोग बढ़े आयू घटे, होय भाग से हीन।।
३४. सोये नहिं किस पाइया, जिन पाया तिन जाग।
टेऊँ हरि पाना चहो, नैने निन्द्रा त्याग।।

३५. मनहीं से सुख होत है, मन ही से दुःख होय।
कह टेऊँ इस मरम को, विरला जाने कोय।।
३६. टेऊँ मन दो भांति का, शुद्ध अशुद्ध स्वरूप।
शुद्ध मिलावे राम से, अशुद्ध डार भव कूप।।
३७. शुभ कर्मों को छोड़ जो, करत पाप के काम।
कह टेऊँ सो मनुष्य दुःख, पावत है यम धाम।।
३८. टेऊँ जितना सुख चहो, उतना कर हरि जाप।
दुःख भी जितना सह सको, उतना करिये पाप।।
३६. प्रारब्ध है प्रबल अति, कह टेऊँ सुन तात।
जहां जीव का भोग है, तहां खैंच ले जात।।
४०. जिसका कोई नेम नहीं, कह टेऊँ जग माहिं।
तांके जीवन स्वास्थ्य का, कोय भरोसा नाहिं।।
४१. कह टेऊँ संसार में, सब वस्तु घट जात।
एकहि तृष्णा ना घटे, बढ़त रहे दिन रात।।
४२. तृष्णा काली नागिनी, दुःख विष से भरपूर।
कह टेऊँ सुख चहत जो, हो तुम तांसे दूर।।
४३. माया छल बल रूप है, माया दुःख का धाम।
टेऊँ माया ममत तज, सुमरो हरि का नाम।।
४४. माया कारन लड़त बस, टेऊँ लोक तमाम।
बेटा लड़ता बाप से, पति से लड़ती वाम।।
४५. निंदक जैसा मीत नहिं, टेऊँ जगत मंझार।
पुण्य देत है आपना, लेहि पाप का भार।।
४६. सर्व वस्तु भगवान की, और किसी की नाहिं।
टेऊँ अपनी जान के, गर्व न कर मन माहिं।।
४७. टेऊँ मैं मेरा तजे, कर प्रभु से तुम प्यार।
सबका कर्ता है वही, काहिं करत अहंकार।।
४८. जांको भय नहिं काल का, सो नित करता पाप।
टेऊँ भय जिंह करत सो, पाप तजे हरि जाप।।
४६. आशा तृष्णा ईर्षा, चौथी चिंता आग।
टेऊँ इसमें जलत सब, बाचे को बड़ भाग।।
५०. दशों दिशा में रम रहा, एक राम भरपूर।
कह टेऊँ अज्ञान कर, मूरख जानत दूर।।
५१. विश्वास घाती कृतघ्न, व्यभिचारी ठग चोर।
कह टेऊँ इन पांच को, तीन लोक नहिं ठौर।।
५२. रे मन तेरा जगत में, दो दिन का है वास।
कह टेऊँ यों समझ के, तज भोगों की आस।।

५३. रैन गयी पुन दिन भया, दिवस गया भयी र
कह टेऊँ मन चेत ले, आयू ऐसे जात
५४. तिल भर दौलत ना चले, दर तक चाले न
मित्र चले शमशान तक, धर्म चले सुर द्वार
५५. पांच तत्व का पिंजरा, तां में पंछी प्रा
कह टेऊँ जब उड़ चला, तब तन सूना जान
५६. और मरे क्यों रोवते, रोवहु अपने हे
इक दिन तुम भी जायेंगे, छोड़ जगत का खेत
५७. कह टेऊँ इस जगत में, देखा सुखी न को
भूप बली पंडित गुनी, सब ही दुख से रोय
५८. ज्ञान बिना नर मूंढ है, ज्ञान बिना पशु जा
कह टेऊँ निज ज्ञान जिहं, सो नर देव समा
५६. कह टेऊँ मन की गती, अधिक पवन से जा
तां को जो जन वस करे, सोई पुरुष सुजान
६०. कह टेऊँ हरि मिलन के, मार्ग बहु जग जा
सब मार्ग में एक ही, सत्संग है प्रधान।
६१. बालापन खेलन गया, यौवन भोगे भोग
कह टेऊँ बूढ़े भये, लागा तृष्णा रोग।
६२. कनक कामिनी देह में, जांका बहुत प्यार
कह टेऊँ दुख पाय सो, जाकर नरक द्वार
६३. सब्र शुक्र जिस जन करा, त्यागे तन अभिमान
कह टेऊँ जिस पुरुष पर, प्रसन्न हो भगवान।
६४. तीन कर्म नित ही करो, भजन दान इस्नान
कह टेऊँ इन तीन से, कलि में हो कल्यान।
६५. मंगते से मत मांगिये, मंगता खुद पेनार
टेऊँ हरि से मांग जो, सबको देवन हार।।
६६. मानुष चोला तुझ मिला, जिसी काम के हेत।
कह टेऊँ सो ना किया, अजहुँ भया अचेत।।
६७. बहु साधन नर करत है, शान्ति हेतु जग माहिं।
कह टेऊँ मन शान्ति बिन, शान्ति न पावत काहिं।।
६८. निर्मल मन चित करन हित, है इक हरि का ध्यान।
कह टेऊँ हरि ध्यान कर, पाओ शान्ति महान्।।
६६. राम नाम उल्टा जपे, वाल्मीक भये पार।
कह टेऊँ तुम न तरहिं, सुल्टा राम उच्चार।।
७०. कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।।

卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐

पूज्यपाद श्री 1008 सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 61 वां वार्षिकोत्सव एवं परमपूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज का 19 वां वार्षिकोत्सव

दिनांक 30-5-2003 से 6-6-2003 तक प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर अजमेर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया जायेगा। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के अन्य सन्त महात्मा गण भी इस समारोह में पधारेंगे।

कार्यक्रम

स्वामी माधवदास जी महाराज का वार्षिकोत्सव प्रारम्भ

शुक्रवार, 30-5-2003	:	प्रातः 5 बजे "प्रभात फेरी" सांय 4 बजे से 6 बजे तक रामध्वनि व सत्संग। सांय 7 बजे श्री राम चरित मानस का अखण्ड पाठ प्रारम्भ
शनिवार, 31-5-2003	:	प्रातः 7 से 1 बजे सत्संग। रात्रि 9 बजे श्री राम चरित मानस का अखण्ड पाठ सम्पन्न।
रविवार, 1-6-2003 (चन्द्र दर्शन महोत्सव)	:	प्रातः 5 से 8 बजे तक सत्संग कीर्तन, 8 से 9 बजे तक हवन, 9 से 1 बजे तक सत्संग। श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पाठ का प्रारम्भ। सांय 4 से 8 बजे सत्संग एवं समाधि पर ज्योति प्रज्वलन उत्सव ।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वार्षिकोत्सव प्रारम्भ

सोमवार, 2-6-2003	:	प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग कीर्तन। सायं 5 से 7 बजे तक जुलूस आदर्श नगर में सायं 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन।
मंगलवार, 3-6-2003	:	सांय 5 से 12 बजे तक सत्संग व गुरू ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ प्रारम्भ। सायं 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन।
बुधवार, 4-6-2003	:	प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग कीर्तन तथा सायं 4 से रात्रि 9 बजे सत्संग कीर्तन।
गुरूवार, 5-6-2003	:	प्रातः 5 से 7 बजे तक "सत्संग" 8 से 9 बजे तक हवन। 9 से 11 बजे तक "ध्वजा वन्दन" बैण्ड व शहनाई वादन तथा 11 से 1 बजे तक सत्संग संत समागम, श्री प्रेम प्रकाश-ग्रन्थ, गुरु ग्रंथ साहिब के पाठों का समापन और भण्डारा। सांय 4 से 7 बजे तक "सद्गुरु महाराज का पूजन" सायं 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग, पल्लव एवं उत्सव की समाप्ति।
शुक्रवार, 6-6-2003	:	श्री प्रेम प्रकाश आश्रम पुष्करराज में प्रातः 8 से 1 बजे तक सत्संग व भण्डारा

22 मई 2003, स्वामी माधवदास जी महाराज का 89 वाँ जन्मोत्सव

सभी सत्संगी प्रेमी पधारकर सत्संग का लाभ उठावें।

सेवा में :- **प्रेम प्रकाश आश्रम** (ट्रस्ट), आदर्श नगर, अजमेर, फोन : 0145-2441850 फैक्स : 0145-2440279 मोबा. : 98292-70850

खैरथल में

मंगलमूर्ति आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज के शिष्य स्वामी जीवन मुक्त जी महाराज का

24 वीं वर्सी-उत्सव व प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव

10 व 11 जून, 2003

इस महोत्सव में वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं भारत वर्ष के सन्त-महात्मा, विद्वान, कवि, भगत आदि सत्संग व ज्ञान-विज्ञान की वचन वर्खा करेंगे। आप सभी इस महोत्सव में सपरिवार आकर मानव जीवन को कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

10 जून, मंगलवार 2003

सत्संग	प्रातः 7 से 9 बजे, हवन प्रातः 9 बजे
ध्वजावंदन	प्रातः 10 बजे
भण्डारा	दोपहर 11 बजे
शोभायात्रा	सांय 4 बजे
सत्संग	सांय 7 से 10 बजे तक

11 जून, बुधवार 2003

सत्संग	प्रातः 7 से 10 बजे तक
भण्डारा	दोपहर 11 बजे
सत्संग	सांय 4 से 7 बजे
सत्संग	रात्रि 9 से प्रातः 6 बजे तक

उत्सव समापन : 12 जून गुरूवार, प्रातः 7 बजे पल्लव व प्रसाद वितरण

शोभा यात्रा का मार्ग : प्रेम प्रकाश अश्रम से अनाज मण्डी, रेल्वे फाटक, चालीस फुटा रोड, सिन्धी कॉलोनी, लाल मन्दिर, सब्जी मण्डी से पुनः प्रेम प्रकाश आश्रम पर समापन

नोट :- पूज्य महाराज श्री 7 जून से 11 जून तक खैरथल के ग्रामीण क्षेत्र में यात्रा करेंगे।

सेवा में :- संत मुरलीधर एवं पूज्य पंचायत खैरथल, प्रेम प्रकाश आश्रम (डिब) टीले के ऊपर, खैरथल, अलवर (राज) फोन : 01460-222737

卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 卐

प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान

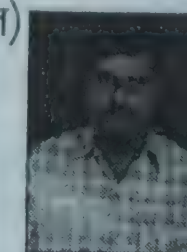
चैत्र मेले में लकी ड्रा द्वारा 5 सदस्यों को सोने के लॉकेट उपहार में प्राप्त

''**प्रेम प्रकाश सन्देश**'' श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की एकमात्र अधिकृत हिन्दी मासिक पत्रिका, जो कि गत तेईस वर्षों से नियमित रूप से सम्पूर्ण विश्व में फैले प्रेम प्रकाशी परिवारों व आध्यात्मजनों को मण्डल सम्बन्धी गतिविधियों की घर बैठे जानकारी पहुँचाती है। पत्रिका के प्रचारार्थ देशभर के विविध स्थानों पर ४० से भी अधिक सहयोगियों (प्रतिनिधियों) के साथ सन्देश से जुड़ा हर पद मानसेवी (अवैतनिक) रूप में निरन्तर सेवारत हैं। २३ वर्षों के पश्चात् प्रथम बार श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में १७ अप्रैल २००३ गुरूवार को रात्रि १० बजे पुण्यधाम श्री अमरापुर स्थान पर प्रेम प्रकाश सन्देश परिवार की सम्पूर्ण बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें ग्वालियर के मुख्य कार्यालय के अतिरिक्त देशभर से आये हुए २५ प्रतिनिधियों ने भाग लेकर प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रचार–प्रसार के लिए अपने अपने सुझाव दिये।

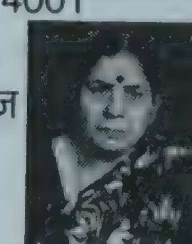
बैठक में लिये गये निर्णयानुसार ''प्रेम प्रकाश सन्देश के सदस्यता वृद्धि अभियान'' का श्री गणेश १८ अप्रैल को रात्रि ८:३० बजे सदस्य पाठकों के उत्साह वर्द्धन के लिये पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज के कर–कमलों द्वारा ५ लक्की ड्रा निकाल कर किया गया। पाँचों भाग्यशाली विजेताओं में प्रत्येक को एक–एक सोने का लॉकेट आचार्य श्री जी के चित्र युक्त उपहार में प्राप्त हुआ।

इन भाग्यशाली विजेताओं का चयन पूरे विश्व भर में प्रेम प्रकाश सन्देश के सदस्यों को (जिनकी शुल्क देय अवधि अप्रैल २००३ अथवा उसके आगे तक है एवं १८ अप्रैल २००३ को दोपहर २ बजे तक बने सदस्य) एक विशेष नम्बर्स देकर पर्चीयों द्वारा लक्की ड्रा पूज्य गुरु महाराज जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। पूज्य सद्गुरू महाराज जी द्वारा **आने वाले वर्ष में भी इसी प्रकार से पाँच सोने के लॉकेट चैत्र मेले के अवसर पर ड्रा निकाल कर भाग्यशाली पाठकों को दिये जायेंगे।**

यह है ५ भाग्यशाली विजेता (प्रत्येक को एक एक सोने का लॉकेट आचार्य श्री के चित्र युक्त)



1. RH - 5389 - 22539 - 3/04
   श्री मोहनलाल जीवनानी
   653, सिन्धी कॉलोनी, आदर्श नगर,
   जयपुर
2. MPH - 2065 - 14739 - 3/04
   श्री जयकुमार मटाई
   27/3, पलसीकर कॉलोनी, **इन्दौर**
3. RH - 2303 -6849 - 10/2003
   कु. सुन्दरी केवलरामानी
   ईसाई मोहल्ला, सिन्धी कॉलोनी, **अजमेर**
4. MH - 3112 - 16904 - 9/2011
   सिमरण श्यामलाल सन्तानी
   प्लॉट-5, पूनम मोती नगर
   सुप्रिया एपार्टमेन्ट, **अहमद नगर**-414001
5. H - 2747 - 11176 - 10/03
   श्रीमती सन्तोष कुमारी अजय बजाज
   3-F/1, एन.आई.टी.
   फरीदाबाद (हरियाणा)



श्री मोहनलाल जीवनानी, जयपुर को सन्त मोनूराम जी के कर–कमलों से, श्री जयकुमार मटाई, इन्दौर को (२६ अप्रैल को इन्दौर में) पूज्य सद्गुरु महाराज जी के कर–कमलों से, कु. सुन्दरी केवलरामानी, अजमेर को (३ मई को अजमेर में) पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज के कर–कमलों से आदर्श नगर, आश्रम पर स्वामी मुरलीधर करनाणी के वर्सी महोत्सव में, श्रीमती सन्तोष कुमारी अजय बजाज फरीदाबाद को दिल्ली मेले में (७ मई को)पूज्य गुरु महाराज जी के कर–कमलों से सोने के लॉकेट दिये गये। सिमरण श्यामलाल सन्तानी को १८ जून को अहमद नगर आश्रम पर पूज्य गुरू महाराज जी के कर–कमलों से सोने का लॉकेट उपहार दिया जावेगा।

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

गुलाबी नगरी व गुरुधाम पर मनाया गया चेटीचण्ड महापर्व

जयपुर ३ अप्रैल २००३ :- चैत्र मास हिन्दू धर्मावलम्बियों का नववर्ष और साथ–साथ ही सिन्धी हिन्दू धर्म के देवता भगवान झूलेलाल जी के अवतरण का दिवस भी इसी मास में मनाया जाता है।

इसी दिन लगभग सैकड़ों वर्ष पहले सिन्धू नदी के पास जब धर्म की हानि हो रही थी। सिन्धी लोगों ने मिलकर भगवान से प्रार्थना की तब वरुण देव झूलेलाल जी ने अवतार लिया उनका अवतार तो एक बार हुआ पर उनके अवतरण का दिवस तभी से हर साल धूम–धाम से मनाया जाता है।

इस साल भी श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में श्री अमरापुर स्थान जयपुर की गुलाबी नगरी में वरुण देव का अवतरण दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः ७ बजे श्री प्रार्थना के साथ कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। पूरे श्री दरबार में प्रार्थना के स्वर जैसे ही उच्चारित हुए श्री दरबार का नीरस व शांत वातावरण स्वरित हो गया।

आज एक तो सिन्धी हिन्दू धर्म के वरुण देव का अवतरण दिवस व दूसरा सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के पावन अवतरण का दिवस गुरुवार था। श्री दरबार में प्रेमीगण अतिशीघ्र ही आकर इन दिव्य दिवस पर हरि का गुणगान कर रहे थे।

प्रार्थना के पश्चात् पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जी ने अपने प्रवचन में हमें बताया कि हमें सिन्धी होने पर गर्व होना चाहिये। **हमें हमेंशा अपनी मातृभाषा बोलनी चाहिए। व जितना हो सके अपनी आने वाली पीढ़ी को भी सिन्धी भाषा सिखानी चाहिये।** साथ–साथ स्वामी जी ने सिन्धी समाज के इष्ट आराध्य वरुण देव के जीवन चरित्र पर भी प्रकाश डाला। लगभग ८:१५ बजे तक स्वामी जी ने अपने दिव्य वचनों की वर्षा की, तत्पश्चात् आरती व धुनि लगाकर सत्संग की समाप्ति हुई।

तत्पश्चात् शुरु हुई स्वामी जी की जयपुर की यात्रा। गुलाबी नगरी में प्रत्येक वर्ष की भांति विभिन्न कॉलोनियों में महापर्व चेटीचण्ड मनाया गया।

१. सर्व प्रथम सिन्धी कॉलोनी, राजापार्क में भगवान झूलेलाल मन्दिर में ध्वजवन्दना व दीप प्रज्जवलित किया गया।
२. गीता भवन में सत्संग प्रवचन व स्वामी जी द्वारा ज्योति प्रज्वलन।
३. जवाहर नगर सेक्टर ५ में सत्संग व दीप प्रज्वलन।
४. जवाहर नगर सेक्टर २ में सत्संग व स्वामी जी के कर–कमलों से ज्योति प्रज्वलित हुई।
५. लाल कोठी, सब्जीमण्डी में स्वामी जी का शहनाई वादन के साथ भव्य स्वागत हुआ। इसमें झूलेलाल जी की भव्य बर्फ झांकी सजाई गई तथा स्वामी जी के कर कमलों से ज्योति प्रज्वलन कराया गया।
६. बाईस गोदाम स्थित गोविन्दपुरी कॉलोनी में युवकों द्वारा डांडिया नृत्य प्रस्तुत किया गया व स्वामी जी ने सत्संग तथा दीप प्रज्वलन किया।
७. और अन्त में दोपहर २:३० बजे गणगौरी बाजार में विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ स्वामी जी ने ज्योति प्रज्वलित करके किया।

इसी प्रकार शाम को भी इस महापर्व की धूम श्री गुरुधाम पर छाई रही। प्रेमीगण गुरुधाम पर आकर सत्संग दर्शन के दिव्य नजारों से अपने को निहाल कर रहे थे। पुष्पों की मनोरम झांकी का दर्शन भी प्रेमियों को आनन्दित कर रहा था।

गुड़िया भरत जेठवानी, जयपुर से

अहमदाबाद के लिये हमारे सहयोगी

श्री नरोत्तम जवाहरलाल परियाणी, ४– स्वामी सर्वानन्द सोसायटी हांसोल, सरदार नगर, **अहमदाबाद**

टेलीफोन : २८६६८१६ मोबा. : ६८२४०–११६८५

अहमदाबाद महानगर के लिये हमारे प्रेम प्रकाश सन्देश परिवार के नये सहयोगी (प्रतिनिधि) नियुक्त किये गये हैं अहमदाबाद के प्रेमी प्रेम प्रकाश सन्देश के लिये श्री नरोत्तम भाई से सम्पर्क कर सकते हैं।

दोहा स्मरण प्रतियोगिता

इन स्थानों पर भी प्रतियोगी दोहे याद करके सुना सकते हैं।

(१) दीपा, बालक भजन मण्डली
प्रेम प्रकाश आश्रम, नन्द नगर **ब्यावर**

(२) रतन कुमार चेलारामानी
लक्ष्मी मेडीकल स्टोर, **मालपुरा**

(३) रवि कुमार मुरलीधर खूबचन्दानी
सद्गुरु शान्ति प्रकाश रेडीमेड, **गोन्दिया**

(४) सुरेश कुमार मानवानी
सुरेश किराना स्टोर, **साम्भरलेख**

श्री अमरापुर समाचार दर्शन

सत्संग हवन, ध्वजावन्दन एवं भव्य शोभायात्रा के साथ सम्पन्न हुआ चैत्र मेला

आकर्षण के केन्द्र रहे, पानी में रंगोली, गुब्बारों की उड़ान, आतिशबाजी, वानरों की सेना

प्रेम प्रकाशियों का महानतम् पुण्य पर्व "चैत्र मेला" जिसमें सहभागी होने के लिये विश्व के कौने-कौने में रह रहे प्रेम प्रकाशी भक्तों का मन हिलोरें लेने लगता है और उनमें से हजारों भक्त यात्रा सम्बन्धी किसी प्रकार के कष्ट, पीड़ा की परवा न करते हुए, आकर पावन धरा श्री अमरापुर धाम पर आकर, चैत्र मेले में सम्मिलित होकर अपने को संसार का सर्वाधिक भाग्यशाली सेवक समझते हुए प्रफुल्लित होते हैं कि उनकी उल्लासता का बयां करना इस लौह लेखनी के बस की बात नहीं है और जो भक्त प्रेम प्रकाशी किसी कारण वश इस पावन मेले में सम्मिलित नहीं हो पाते। लेकिन उनका मन उस समय श्री अमरापुर धाम के हर कार्यक्रम में अपने को सम्मिलित हुआ पाता है। ऐसे प्रेमी भी पाते हैं पुण्य फल-मानसिक रूप में सन्त दर्शन सेवा सत्संग का, जगत के कल्याण हेतु श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा प्रेमियों को पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति कराने के लिये ८१ वर्ष पूर्व सन् १६२१ के चैत्र माह में सिन्धी चैत्र की १२ तारीख से १६ तारीख तक टण्डे आश्रम अमरापुर स्थान में चैत्र मेले की स्थापना की गयी, सन् १६४२ तक स्वयं आचार्य श्री की पावन छत्र छाया में प्रतिवर्ष असंख्य प्रेमियों ने चैत्र मेले में सम्मिलित होकर परम आनन्द के अमृत को चखा, तत्पश्चात् १६४३ से १६७७ तक महर्षि सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज की पावन प्रधानता में १६७८ से १६६२ तक श्रीकृष्ण स्वरूप सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज की प्रेम प्रधानता में, १६६३ से २००० तक मर्यादा मूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की पवित्र अध्यक्षता में और सन् २००१ से चैत्र मेले की पावन प्रधानता का पुण्यमयी सान्निध्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के प्रेममयी स्वरूप से प्रेमियों को प्राप्त हो रहा है। **इसी परम देदीप्यमान "चैत्र मेले" का ८२ वाँ वार्षिकोत्सव १५ अप्रैल मंगलवार से १६ अप्रैल २००३ तक शनिवार तक प्रेम प्रकाशियों के परम पावन गुरुधाम अमरापुर स्थान में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।** सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी मनोहर प्रकाश जी महाराज, स्वामी जयदेव जी, सन्त दयप्रकाश जी, सन्त नामदेव जी, सन्त हरिओम प्रकाश जी, सन्त मोन्राम जी, सन्त मुरलीधर जी (आदर्श नगर आश्रम के ट्रस्टी) सन्त प्रतापराय जी, सन्त हीरानन्द जी, सन्त रमेश प्रकाश जी, सन्त रामदास जी, सन्त झामनदास जी, सन्त, शम्भूलाल जी, सन्त श्यामलाल जी, सन्त नन्दलाल जी, सन्त जीतू प्रेम प्रकाशी, सन्त संजय प्रेम प्रकाशी, सन्त नरेशलाल जी (इन्दौर), सन्त लालूराम जी, सन्त नरेशलाल जी के अतिरिक्त भक्त श्रीमुक्त, भक्त किशन, भक्त लखामीचन्द, सुश्री कमला केसवाणी चैत्र मेले में सम्मिलित होने वालों में प्रमुख थे। आईये हम भी इस लेख के माध्यम से ८२ वें चैत्र मेले में विचरण करते हुए परमानन्द प्राप्ति के लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें-

चैत्र मेले की खास बातें

१. **मुख्य द्वार पर प्रातः ७ बजे भगवान श्री गणेश का पूजन।**
२. **हवन कुण्ड के चारों ओर विशाल संत समुदाय का अनुपम दृश्य।**
३. **ध्वजावन्दन अवसर पर पुष्पों व गुब्बारों का विहंगम नजारा।**
४. **शोभायात्रा में भगवान श्री राम की रथ यात्रा में वानर सेना।**
५. **सद्गुरु टेऊँराम संकीर्तन यात्रा।**
६. **प्रेम प्रकाश नवयुवक मण्डली कोटा के लगभग ५० सदस्यों द्वारा राम नाम युक्त एकरूपता लिये हुए वस्त्र धारण, रायपुर मण्डली, स्पेन मण्डली के अतिरिक्त अन्य अनेकों नगरों की मण्डलियों के उत्साही प्रेमियों द्वारा अपने-अपने नगर की एक सी वेशभूषा धारण करना।**
७. **श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा भी सभी सदस्यों के लिये एकरूपता लिये वेश भूषा**

मेले का शब्दिक अर्थ है बहुत से लोगों का उद्देश्य सहित एक स्थान पर एकत्रित होना, ये त्यौहार ये उत्सव और ये मेले जीवन की नीरसता और निर्जीवता को दूर कर उसमें आनन्द, उल्लास और स्फूर्ति भरते हैं। मेले का अर्थ ही है मेल–मिलाप। हृदय का हृदय से मिलन, आत्मा का आत्मा से मिलन और उसके उच्चतम शिखर पर आत्मा का परमात्मा से मिलन।

ऐसा ही एक मेला जिसका नाम चैत्र मेला है जिसके लिये प्रतीक्षित सभी प्रेमीगण इस दिव्य मेले में आकर महापुरुषों के परम–पावन जीवन से विश्व की महान विभूतियों के सुन्दर चरित्र से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए लालायित होते हैं। चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज जी ने स्वयं अपने कर कमलों से किया था।

मेले के आरम्भ से एक दिन पूर्व अवधूत स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पुण्यतिथि मनायी गई। ८२ वाँ चैत्र मेला श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता व अन्य सन्तों महात्माओं की सानिध्यता में श्री अमरापुर दरबार में असंख्य श्रद्धालुओं की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

१४ अप्रैल २००३, सोमवार : आज चैत्र मेले के एक दिवस पूर्व परमपूज्य स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का वर्सी महोत्सव मनाया गया। चैत्र मेले में सम्मिलित होने के लिये बाहर से आने वाले प्रेमियों का सैलाब सा उमड़ रहा था। स्थानीय प्रेमियों के भाग्य का तो कहना ही क्या, इतने विशाल स्तर पर मनाये जाने वाले मेले की तैयारियों के लिये गत दो महीनों से प्रेमीगण सन्त मण्डल के निर्देशन में सेवा कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे।

के साथ शोभायात्रा का प्रबन्धन करना।

८. शोभा यात्रा में व समाप्ति पर रंग बिरंगी आतिशबाजी।

६. सांगानेरी गेट पर ३० फुट विशाल बर्फ की झांकी।

१०. नन्ही-मुन्नी बालिकाओं द्वारा सांई टेऊँराम - सांई कंवरराम व भगवान झूलेलाल के भजनों पर नृत्य।

११. अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनूप जलोटा, अनुराधा पोड़वाल, साधना सरगम आदि कलाकारों द्वारा स्वरित नई कैसेटों का विमोचन।

१२. प्रतिदिन प्रातः ५ बजे प्रभात फेरी व शहनाई द्वारा मंगल गायन।

१३. पानी में रंगोली, फूलों की झांकी, विशाल मंच आकर्षण का केन्द्र रहे।

१४. प्रथम बार प्रेम प्रकाश सन्देश के सदस्यों के लिये ५ सोने के लॉकेट उपहार योजना।

१५ अप्रैल, २००३, मंगलवार : जयपुर के प्रेमीगण कृतार्थ हो रहे थे। आज प्रेम प्रकाश पन्थ का ८२ वाँ चैत्र मेला जिसको मनाया जा रहा था। श्री अमरापुर की धराधाम पर गत २ माह से जिसके लिये तैयारियाँ जोरो–शोरों पर चल रही थी, आखिर जिस दिन के लिए ये तैयारियाँ चल रही थी वह दिन आ ही गया और हमने भी इस महान चैत्र मेले का आनन्द शामिल होकर उठाया आईये पढ़ें आखों देखा विवरण।

श्री अमरापुर दरबार पर प्रवेश करते ही दर्शन हुए भगवान गणेश पूजन के पूज्य महाराज श्री व सन्त गण प्रवेश द्वार पर बने गणेश जी की पूजा कर रहे थे।

भव्य प्रवेश द्वार जिसको हाल ही में नवीनतम रंगों से सजा कर आकर्षक बनाया गया है। भव्य प्रवेश द्वार को रंग–बिरंगी आकर्षक लाइटों से सजाकर भव्य महल का रूप दिया गया था। इस भव्य महल के द्वार से प्रवेश करके जैसे ही अन्दर दाखिल हुए, इतना मनोहरकारी दृश्य चारों तरफ प्रेमीगण अपने–अपने कार्यों में व्यस्त हो रहे थे। प्रवेश द्वार के दायीं ओर टेण्ट लगाकर एक प्रकोष्ठ बनाया गया था जिसमें आने वाले यात्रियों की सुविधार्थ समुचित सत्कार देते हुए आवस पास बनाये जा रहे थे। वहीं बांयी ओर प्रेमियों की सुविधा के लिए जूताघर में सेवाधारी पूर्ण लगन से सेवाकार्य में व्यस्त थे। वहीं पास में बने बगीचे में बुक स्टाल लगाया गया था। जिसमें सद्‌गुरु महाराज की कैसेट किताब फोटो व स्टीकर प्रेमियों को उपलब्ध थे। जिसमें आकर प्रेमीगण अपने जरूरत की चीजें खरीद रहे थे।

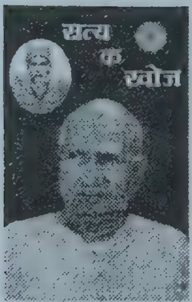
इन सबको देखने के पश्चात् जैसे ही गुरुमुख द्वार की चमचमाती सीढ़ीयाँ चढ़ रहे थे।

गुरुमुख द्वार पर की गई पुष्पों की मनोहरकारी सजावट देखकर नेत्र प्रफुल्लित हो उठे। विभिन्न रंग बिरंगे पुष्पों के गुच्छे बनाकर इनको द्वार के शीश पर लगाया गया था। इस मनोहरकारी द्वार से ऊपर चढ़कर जैसे ही हमने प्रवेश किया श्री दरबार के विशाल सत्संग सभागारमें तो देखते ही स्तभिन्त होकर खड़े हो गये, श्री दरबार का विशाल परिसर पीतवर्ण के शामियाने से ढककर पीताम्बरी हो रहा था। इस शामियाने को और अधिक भव्य बनाने के लिए बड़े–बडे झूमर लगाए गए साथ ही गर्माहट् से प्रेमियों को बचाने के लिये पंखे भी लगाए गए थे।

इस भव्य सत्संग परिसर से होकर जैसे ही सत्संग हॉल में प्रवेश किया तो भव्य सजावट अहा ! कितना मधुरकारी दृश्य है। सत्संग मंच के मध्य में बड़ा अस्थायी मंच बनाया गया, जिसके मध्य लगाया गया विशाल चित्रकारी किया गया पर्दा। जिसमें आचार्य स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज अपने वरद् हस्त को उठाए हम प्रेमीयों को अपने आशीर्वाद से कृतार्थ कर रहे थे। वहीं नीचे स्वामी जी के परम शिष्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज व सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की भी मनोहरकारी छवियाँ बनाई गई थी। इनके बीच में प्रेम प्रकाश मण्डल का ८२ वाँ चैत्र मेला सुनहरी अक्षरों में लिखा हुआ था और बनाया गए अति आकर्षक वृक्ष।

वहीं सत्संग मंच के पास में एक आसन बनाया गया जिसके ऊपर परदे से ढककर एक अति सुन्दर प्रकोष्ठ बनाया गया जिसके चारों ओर रंग बिरंगी पताकाओं फूल मालाओं से इतना आकर्षक सजाया गया कि इसको देखने के लिए मन लालायित हो उठता था, हो भी क्यों नहीं, क्योंकि इस आकर्षक प्रकोष्ठ में विराजमान थी हमारे प्यारे इष्टदेव भगवान लक्ष्मी नारायण, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज व सद्गुरु स्वामी हरिदास राम जी महाराज की चित्ताकर्षक प्रतिमाएँ विराजित थी। वहीं अन्दर श्री मन्दिर व समाधि स्थल की आभा भी अति आकर्षक थी। नवीन वस्त्राभूषणों से अलंकृत थी भगवान लक्ष्मी नारायण की मनोहरकारी प्रतिमाएँ वहीं समाधि स्थल की आभा आज ज्यादा ही अलंकृत हो रही थी। समाधि स्थल पर श्वेत रंग के बने फर्श पर रंग बिरंगे फूलों व पुष्पों की अपूर्व शोभा देखकर प्रेमियों का मन परम आनन्द की उड़ान भरने लगा। श्री दरबार का सम्पूर्ण सत्संग परिसर सजावट का केन्द्र बना हुआ था। दीवार पर एक कोने में कम्प्यूटर संचालित एक यंत्र बनाया गया जिसमें दैनिक वचन व चैत्र मेले के सम्पूर्ण कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त होती थी। सत्संग परिसर को विभिन्न प्रकार के पताकाओं झालरों से शोभित किया गया था। देखा जाए तो सम्पूर्ण श्री दरबार की शोभा आज किसी भी ढंग से कम नहीं थी। इस अनुपम अद्भुत सुन्दरता के दर्शन करने के पश्चात् आइए हम भी प्रातःकाल व सायंकाल होने वाले सत्संग ज्ञान गंगा में डुबकी लगाने के लिए श्री दरबार में प्रवेश करते हैं। पूर्व की परम्परा अनुसार प्रातः ५ बजे ही श्री दरबार का सम्पूर्ण वातावरण राधे–राधे श्याम मिलादे की मधुरकारी धुनि से स्वरित हो रहा था। **प्रभात फेरी** जिसे भक्त श्री मुक्त संचालित कर रहे थे। श्री दरबार के चारों कोनों में मधुर धुनी को उच्चारित करते हुए गुरुमुख द्वार पर आ गई। तत्पश्चात् प्रार्थना के स्वर जैसे ही गुंजित हुए सभी बहार से आए प्रेमीगण व जयपुर के प्रेमियों ने श्री दरबार के सम्पूर्ण परिसर को घेर लिया, प्रार्थना के पश्चात् सत्संग के अमृत वचनों की वर्षा हुई। सम्पूर्ण सत्संग परिसर प्रेमियों से भरा हुआ था। प्रेमीगण अगाध भाव से सन्तों के दिव्य मुस्कान की आभा व उनके अमृत वचनों का श्रवण कर रहे थे। घड़ी के ८:४५ बजते ही सभी सन्तगण व श्रद्धालुगण श्री दरबार के परिसर के दक्षिण पूर्व में स्थित यज्ञशाला में एकत्रित हुए। आज यह यज्ञशाला अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक शोभित लग रही थी। सेवाधारियों ने इसे रंगों व पुष्पों से सजाकर नवीन रूप दे दिया था। श्वेत व गेरू वस्त्र धारण किये सन्त व उनको चारों तरफ से घेरे हुए असंख्य श्रद्धालुगण **हवन** शुरु होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। श्रद्धालुगण श्री दरबार परिसर की यज्ञशाला के बाहर स्थित परिसर में बैठ कर यज्ञ का आनन्द उठाने के लिए लालायित हो रहे थे। लगभग १० मिनट पश्चात् यज्ञ पुरुष भगवान व सद्गुरु महाराज की जयजयकार करके यज्ञ शुरु हुआ। सन्तगण द्वारा सभी देवी देवताओं की जय

पुस्तक समीक्षा



सत्य की खोज

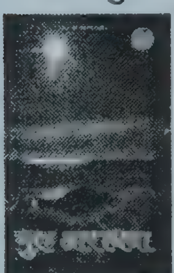
(स्वामी हरिदासराम जी महाराज के प्रवचन)

''महाराज श्री'' के गूढ़ ६ प्रवचनों का संकलन कर **''सत्य की खोज''** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। प्रवचनों को बड़े मार्मिक रूप से दर्शाया है हमारे ''श्री प्रीतम प्रेम प्रकाशी जी ने।'' बड़े ही सुन्दर रूप से साज–सजाकर ''सत्य की खोज'' का विमोचन चैत्र मेले के पावन अवसर पर किया गया है। इस पुस्तक का मूल्य मात्र **१५ रु.** रखा गया है।

नित्य नियम प्रार्थना



प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है कि प्रातःकाल प्रतिदिन गुरु अमृतवाणी का पाठ करना चाहिए। जिससे मन को शान्ति मिलती है। मन प्रसन्नचित रहता है। इसी उद्देश्य को रखकर छोटी **''नित्य नियम प्रार्थना''** पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तक में भजन, दोहे, आरती, प्रार्थना आदि सम्मलित किये गये हैं। पुस्तक का मूल्य **५ रु.** है।



गुरु आराधना

(सद्‌गुरु टेऊँराम महिमा भजन)

आचार्य श्री सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज की महिमा के १०८ भजन, गुरु प्रार्थना, आरती आदि सम्मलित कर **''गुरु आराधना''** पुस्तक प्रकाशित की गई है। शनिवार चौथ आदि पावन पर्वों पर यह पुस्तक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पुस्तक का मूल्य **१५ रु.** रखा गया है।



गुरु वन्दना

(स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन)

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की महिमा १०८ भजनों को संकलित कर **''गुरु वन्दना''** नामक पुस्तक प्रकाशित की गई है। चैत्र मेले के पावन अवसर पर पुनः नवीन संस्करण ''गुरु वन्दना'' पुस्तक का विमोचन किया गया। पुस्तक का मूल्य मात्र **१५ रु.** मात्र है।

प्राप्ति स्थल : **श्री अमरापुर स्थान,** जयपुर



गुणगान

सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

महिमा - भजन

विगत दिनों १८ अप्रैल २००३ को प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा के भव्य सत्संग समारोह में हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में–युग पुरुष सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज के महिमा भजनों के नवीन पुस्तक का विमोचन पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

अपने आप में अनूठी व अपूर्व यह पुस्तक सतगुरु महाराज जी के पावन यश से ओत प्रोत है। इस पुस्तक में विभिन्न कवियों द्वारा रचित कुल १२७ भजन संकलित हैं। जिसके गान करने से भी गुरु महाराज की पावन स्मृति रोम–रोम को रामेञ्चित कर देती है। प्रेम प्रकाश आश्रम सूरत के सहयोग से प्रकाशित यह पुस्तक अत्यंत मनमोहक व संग्रहणीय है। भक्तजन इसे हर मंगलवार यानी सत्गुरु शांतिप्रकाश महाराज के पावन दिवस पर आश्रमों घरों पर इसे गाकर आत्मानंद को प्राप्त कर सकते हैं।

महाराज जी के महिमा भजनों का यह प्रथम भाग है। इसे प्रेम प्रकाश आश्रम, बड़ौदा, सूरत, जयपुर, उल्हास नगर, मुरैना, नवसारी, कोल्हापुर आदि के बुक स्टालों से प्राप्त किया जा सकता है।

पुस्तक का नाम	: गुणगान सत्गुरु शांति प्रकाश महिमा भजन
मूल्य	: ५/– रु.
पृष्ठ	: ७५
कुल भजन संख्या	: १२७
भाग	: प्रथम

चैत्र मेले के पावन पर्व पर सद्‌गुरु महाराज के कर कमलों से विमोचित

1. गुरू आराधना (स्वामी टेऊँराम महिमा भजन पुस्तक 15 रु.
2. गुरू वन्दना (स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन पुस्तक) 15 रु.
3. सत्य की खोज (स्वामी हरिदासराम जी महाराज प्रवचन पुस्तक) 15 रु.
4. नित्य नियम प्रार्थना (पुस्तक) 5 रु.
5. सत्नाम साक्षी मंत्र (२४ घण्टे बजने वाला यंत्र) 150 रु.
6. कलाई घड़ियाँ सद्‌गुरु महाराज जी के चित्र युक्त 100 एवं 125 रु.
7. कटाऊट लेमिनेशन मूर्तियाँ 50 व 75 रु.
8. सत्नाम साक्षी अंकित बनियान 30 रु.

।। ऑडियो सीडी कैसेट।।

	ऑडियो	सीडी
1. स्वामी टेऊँराम चालीसा	25/-	50/- रु.
2. स्वामी सर्वानन्द चालीसा	25/-	50/- रु.
3. गुरू प्रार्थना	25/-	50/- रु.
4. स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी	25/-	50/- रु.
5. सत्नाम साक्षी सर्व आधार (धुनी)	25/-	50/- रु.

।। वीडियो सीडी।।

1. स्वामी टेऊँराम दिग्दर्शन 50 रु.
2. प्रेम प्रकाश मण्डल समाचार दर्शन 50 रु.
3. चैत्र मेला 2003 (3 कैसेट सेट) 100 रु.
4. संत समागम मुम्बई मेला (3 कैसेट सेट) 100 रु.

यात्रा दर्शन — *सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डली का देशाटन*

सूर्यनगरी जोधपुर, पाली व ब्यावर में सद्गुरु महाराज जी का भव्य स्वागत

सूर्यनगरी जोधपुर व पाली के प्रेमियों की लम्बे समय से प्रेम भक्ति से प्रसन्न होकर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने दिनांक ४ अप्रैल से ६ अप्रैल को पाली, जोधपुर पहुँचकर सत्संग के प्यासे प्रेमियों को अपने दिव्य दर्शन देकर सत्संग ज्ञान का अमृत पिलाया।

ब्यावर के प्रेमियों के विशेष आग्रह पर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज दिनांक ४ अप्रैल को प्रातः ७ बजे अमरापुर रथ (बस) से संत मण्डली के साथ रवाना होकर प्रातः ११:०० बजे ब्यावर प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे। सद्गुरु महाराज एवं संत मण्डली के पधारने पर श्री सुन्दरदास डेटानी, उद्धवदास, नानकराम, हरि हेमलानी दादी सती, नारायणदास रतनानी (ट्रस्टी आदर्श नगर आश्रम, अजमेर) भगत शंकर एवं पधारे असंख्य प्रेमियों ने फूलों व माल्यापर्ण कर स्वागत किया। सद्गुरु महाराज के साथ पधारे संत मण्डली में संत दयाप्रकाश, संत रामदास (बड़ौदा), भगत जीमुक्त, संत हरीश प्रेम प्रकाशी, संत परसराम प्रेम प्रकाशी, भगत मूलचन्द, दादा तीर्थदास, दादी चेता बाई व मण्डली ने दोपहर सत्संग कर प्रेमियों को लाभान्वित किया। सद्गुरु महाराज ने सत्संग ज्ञान वर्खा कर पल्लव पाकर दिन के ३ बजे पाली के लिए प्रस्थान किया।

सांय ५:३० बजे सद्गुरु महाराज व संत मण्डली के **पाली** पधारने पर उपस्थित प्रेमियों ने जो लम्बे समय से अपने हाथों में फूल मालायें लिए बैण्ड बाजों के साथ खड़े थे, भव्य स्वागत किया। सांय ६ से ४ बजे सद्गुरु महाराज ने **झूलेलाल चौक, सिन्धी कॉलोनी, पाली** में उपस्थित असंख्य प्रेमियों को अपनी अमृतरूपी वाणी से सत्संग वर्खा कर मंत्र मुग्ध कर दिया। सद्गुरु महाराज ने रात्री विश्राम पाली में कर दिनांक ५ अप्रैल २००३ को प्रातः पाठ साहब का भोग सम्पन्न कर प्रातः ८ बजे जोधपुर के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक ५ अप्रैल को प्रातः १० बजे सद्गुरु महाराज व संत मण्डली के सूर्यनगरी **जोधपुर** में पधारने पर पहली पुलिया चौपासनी, जोधपुर में उपस्थित हजारों प्रेमियों ने फूलों व मालाओं से सद्गुरु महाराज व संत मण्डली का भव्य स्वागत कर बैण्ड बाजों, शहनाई के साथ गाते बजाते चौपासनी क्षेत्र में भव्य जुलूस निकालकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की धुनी लगाकर प्रसन्नचित प्रेम प्रकाश आश्रम में पधारे।

सूर्यनगरी जोधपुर में सद्गुरु महाराज के भव्य स्वागत में पार्षद धनवन्ती डोडवानी, कन्हैयालाल खटवानी, कन्हैयालाल टेवानी, श्री नारायणदास केवलरामानी, नारायणदास लिमानी, लक्ष्मणदास दांतवानी, ताराचन्द श्यामवाणी (अशोक कुमार), मनोहरलाल, जेठानन्द लालवानी, दयालदास खिमानी, अशोक पमनानी, मोहन केसवानी, नारायणदास सांवलानी, विशन लालवानी, राजकुमार गुरनानी, मनोहर बदलानी, हरिओम पंजवानी, किशोर कुमार, भगवानदास भोजवानी, राधाकिशन बाबानी, गोविन्दराम व हजारों प्रेमी उपस्थित थे। सूर्यनगरी जोधपुर के प्रेमियों ने एक लम्बे अन्तराल के बाद अपने नेनों के प्यारे मन के दुलारे सद्गुरु महाराज के पावन दर्शन पाकर अपने को धन्य किया।

दूसरी पुलिया चौपासनी के विशाल मैदान में आयोजित सत्संग मण्डप में सद्गुरु महाराज व संत मण्डली ने दिनांक ५ अप्रैल को अपनी अमृतरूपी वाणी से सत्संग ज्ञान वर्खा कर उपस्थित असंख्य प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर लाभान्वित किया।

सद्गुरु महाराज स्वामी भगत प्रकाश महाराज ने अपनी अमृतरूपी वाणी में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की महिमा बतलाते हुए समझाया कि :–

दोहा :-

१. *सदगुरु मुझ को दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।*
कहे टेऊँ नित सुमति दे, संतनि मांहि निवास।।

२. *निश्चल मन से मिलत हैं, निश्चल आत्मराम।*

टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।

भजन :-

ड्रिसी दुनिया जा रंग तमाशा, लोभ लहरि में मतां लुड्रीं।
दुनिया में सुख मिलिणो नाहे, छो न दुनिया खां धार रहीं।
स्मरण करि गुरु मंत्र जो, सुमरण कष्ट मिटाइन्दो।
धीरज धरि मन मुंहिजा।
सद्‌गुरु कष्ट मिटाईदों, ब्रेड़ा पारि लग्राइदों।

गुरु महाराज ने हमें अपनी अमृत रूपी वाणी में समझाया कि हमें संसार के बाहर के भौतिक सुख देखकर खुश नहीं होना चाहिये क्योंकि यह सब खाक (मिट्टी) के समान हैं, यह सब स्वप्न के समान है, अन्त समय में हमारे साथ संसार के भौतिक पदार्थ साथ नहीं जाते हैं। इसलिए हमें अपने अन्दर मन विवेक से विचार करना चाहिये कि वह कौन सी वस्तु है जो अन्त में हमारे साथ जाती है, वह है संतों के संग से प्राप्त नाम सुमरन – जिसके सुमरन करने से प्रभु परमात्मा को इस माया रूपी संसार के भव जाल से बाहर निकल कर प्राप्त किया जाता है। इसलिए सद्‌गुरू महाराज हमें समझाते हैं कि हमें अभी से ही अपने कीमती स्वांस नाम सुमरन में लगाकर संसार के सब भौतिक पदार्थ त्याग कर प्रभु परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए। नाम सुमरन को हमें अपना मन बुद्धि को भी स्थिर रख कर करना चाहिए। तभी ही हम गुरू द्वारा बतलाये गये नाम रूपी मार्ग पर चलकर अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। सद्‌गुरुं महाराज की शरण में जाने पर हमारे सारे कष्ट, क्लेश, दुख सब दूर हो जाते हैं।

गुरु महाराज ने हमें समझाया है कि हमें इस संसार में रहते हुए गृहस्थ धर्म के समस्त कर्तव्यों को पूरा करते हुए भी नाम सुमरन कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। जिसे भजन द्वारा स्पष्ट किया कि :–

भजन :- *रहे समुद्र में सिपी निमाणी।*
बादल जो पर पीए थी पाणी।
तीएं जग्र खे अन्दर धार तूं।

भजन :- *पचड़ पराई करण छ्दे द्रे–२*
न की घणो ग्राल्हाइ तूं
सद्‌गुरु सन्तन जी शरण वञ
गीत हरिअ जा ग्राइं तूं
जप घड़ी २ घनश्याम – तुंहिजो आ भलो।

भजन :-

मुंहिजो मन विषयुनि खे छ्दे तुहिंजे ध्यान में मग्न रहे।
तुहिंजे स्मरण ऐं चिन्तन जी मन में लग्न रहे।
भली सुधि तन मन जी वञे अहिड़ो प्रेम जो प्यारियो जामु।
गुरु देव मिठा मन ठार मुंहिजा सद्‌गुरु टेऊँराम।
ईहा दया कयो मुंते नित जपिया तव्हांजो नामु।

गुरू महाराज ने समझाया है कि जिस प्रकार समुद्र के अथाह खारे पानी में पानी का भण्डार होते हुए भी उसमें रहने वाली सिपी समुद्र का खारा पानी नहीं पीती हैं, वह बादल के बरसने पर उसकी केवल मीठी बूंद पीती हैं। उसी तरह हमें भी इस माया रूपी संसार में अपने कर्तव्यों को निभाने के साथ झूठ कपट को छोड़कर गुरु महाराज की शरण में जाकर उनके द्वारा बतलाये गये नाम रूपी बूंद पीकर जीवन को सफल बनाना चाहिये। जो हमें मानव का चोला मिला है इस चोले को पाने के लिए देवता भी तरसते हैं। उस मानव चोले को सफल करने के लिए हमें अपने मन बुद्धि इन्द्रियों को प्रभु परमात्मा के स्मरण में लगाकर अपना मानव चोला सफल बनाना चाहिये, इसके लिए संसार के समस्त भौतिक सुखों को त्याग कर ही भवसागर से पार पहुँच सकते हैं। आगे गुरु महाराज ने हमें समझाया है कि :–

भजन :-

जग्रत जा भोग्र भग्रवत खां, बन्दा तोखे भुलाइन था।
ड्रिसण में थई मिठी माखी, दुखी थीदें चखे चाखी।

भजन :-

धन यौवन उड़ जायेगा, जैसे उड़त कपूर।
नारायण गोविन्द भज, क्यों चाहे जग धूड़।।

गुरु महाराज ने समझाया कि संसार के भौतिक सुख जिन्हें हम देखकर खुश होते हैं वह आगे हमें दुखी करते हैं। इस दुख का कारण भी यही है हमारा सब धन भौतिक सुख व शरीर भी एक दिन समाप्त हो जायेगा। इसलिए हमें संतों की शरण में जाकर प्रभु परमात्मा का सुमरन करना चाहिये।

भजन :-

मोती न की लाल घुरां, मद्रियूं न की माल घुरां।
राग्र न की लाल घुरां, रस न रसाल घुरां।
स्वर्ग न पाताल घुरां, न की घणां सवाल घुरां।
दर्शन जी आश, गुरु दर्शन जी आश।
राम सां मिलाइ मुंखे श्याम सां मिलाइ।

भजन :-

अमां रहिजी कीअं ईदों,
हीउ सांगु फकीरी जो द्रसि सुरहो कीअं थींदो।
हिकु कोट अन्दरि रहिजांइ।
नितु संतनि जे संग में रही सखित्यूं सिरि सहिजाइं।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की माताजी ने सद्गुरु महाराज को बचपन से ही बहुत अच्छी–अच्छी शिक्षायें दी। जिसमें यह बतलाया गया है कि पहिले गुरु की आज्ञा मानो, फिर माता पिता की आज्ञा जरूरी है। जब भगवान राम को राजा दशरथ ने १४ वर्ष वनवास की आज्ञा दी तब भगवान राम ने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए पहिले माता कौशल्या की आज्ञा ली जिसमें माता कौशल्या ने आशीष की कि वनवास में तुझे जंगल में ऐसी सौ अयोध्या जैसा सुख मिलेगा। इसी प्रकार माता कृष्णा ने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज को बताया कि एक कोट–किला बनाना जिस कोट किले में संसार के भौतिक सुख माया मोह दुश्मनों का वार न हो जिसे संतों के सत्संग द्वारा किले को मजबूत बनाकर तैयार करना ताकि माया मोह के दुश्मनों का वार किले पर न हो सके।

इसलिए अपने मानव चोले के कीमती स्वासों को गुरु महाराज द्वारा बतलाते गये नाम सुमरन में लगाकर मानव चोला सफल बनाना चाहिये। इसके लिए हमें ससार के समस्त भौतिक सुखों का त्याग करके अभिमान रूपी सिर काट कर गुरु की चरण शरण में जाकर प्रभु परमात्मा का नाम सुमरन कर संसार के भव सागर को पार करना चाहिये। इसी के साथ सद्गुरु महाराज ने दिनांक ६ अप्रैल २००३ को रात्री में उपस्थित असंख्य प्रेमियों को आशीर्वाद देकर पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया और प्रातः ७ अप्रैल २००३ को अमरापुर जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

मोहन शिवनानी (अजमेर) व
ताराचन्द श्यामवाणी (जोधपुर) यात्रा से

प्रेम प्रकाश सन्देश सदस्यता वृद्धि अभियान इन्दौर में भी १० पुरस्कार दिये गये

प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रचार अभियान ने इन्दौर में अपने ८ वर्ष पूर्ण किये। इस अवसर पर हमारे संदेश प्रतिनिधि राजू के. ठकुरैल ने प्रचार अभियान के प्रोत्साहन हेतु इन्दौर मेले के पाँचवे दिन रसीद नम्बरों द्वारा स्वामी जी के हाथों से १० लक्की ड्रॉ खुलवाने की घोषणा की, जिसके फलस्वरूप सन्देश के सदस्यों में उल्लास भर गया। पाँचों दिन सन्देश के व्यवस्थापकों को जैसे सदस्यों की बुकिंग करने से फुरसत ही नहीं मिल पाई। इस योजना के अन्तर्गत कई नये सदस्यों को सन्देश की आध्यात्मिकता का दर्शन कराते हुए सदस्य बनाया गया। नये सदस्यों को लगभग १५ वर्ष पुराने सन्देश भी दिये गये। अन्य नगरों से आए कई प्रेमियों जैसे जयपुर, जोधपुर, बड़ोदरा, कच्छ, भुसावल, धुलिया, देवास, रतलाम जैसे शहरों के प्रेमी भी सदस्य बने। मेले के पाँचवे दिन पल्लव के पश्चात् स्वामी जी ने जैसे ही लक्की ड्रॉ से भरे हुए बक्से को खोला तो पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा, स्वामी जी द्वारा निकाले गये पहले ६ विजेताओं को पूज्य स्वामी जी के कर कमलों द्वारा सद्गुरु महाराज जी के चित्र युक्त एक–एक गोल्डन हाथ घड़ी दी गई जिसकी सेवा श्री आवतराय जी व राजू के. ठकुरैल ने की। तत्पश्चात् मुख्य लक्की ड्रा **संजय थदानी, इन्दौर** का खुला जिसमें दो गोल्डन हाथ घडियाँ दी गई। जिसकी सेवा सन्त शम्भूलाल जी ने की। नौ विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं।

१. **ग्वालादास रामचंदानी,** इन्दौर
२. **हरीश तलरेजा,** भुसावल
३. **नरेश मूलचन्दानी,** इन्दौर
४. **अर्जुनदास भोलाड़ा,** इन्दौर
५. **सुनीता हबलानी,** इन्दौर
६. **सुभाष छेतिया,** इन्दौर
७. **गंगाधर गुरनोमल,** इन्दौर
८. **प्रतापसिंह आर्तवानी,** शाजापुर
९. **किशोर सीतलानी,** इन्दौर

सन्देश प्रचार अभियान के इस महायज्ञ में हमारे सन्देश प्रतिनिधि राजू के. ठकुरेल के साथ सुश्री एनी माखीजा, नेहा बजाज, दीपा लीलानी का सराहनीय योगदान रहा।

किशोर लालचंदानी, इन्दौर से

जयकार व आहुति दी गई जो कि लगभग एक घण्टे तक चलती रही फिर अन्तिम आहुति देकर इस यज्ञ की समाप्ति हुई उसके पश्चात् सभी सन्तगणों ने खड़े होकर यज्ञशाला के फेरे लिये और आरती व शिवोऽम् की ध्वनि लगाकर हवन कार्यक्रम की समाप्ति हुई, फिर शुरू हुआ **ध्वजावन्दन** का कार्यक्रम जिसके सम्पन्न होने के साथ ही मेले का शुभारम्भ किया जाता है।

श्री दरबार के दक्षित पूर्व छोर पर स्थित ध्वजास्तम्भ आप सन्तगणों से अलंकृत हो रहा था। सभी प्रेमीगण अपने–अपने स्थान पर बैठकर ध्वजास्तम्भ की ओर निहार रहे थे। महाराज श्री ने सर्वप्रथम ध्वजा पूजन किया और इस ध्वजा को सन्त नन्दलाल जी के हाथों में सौंप दिया।

श्वेत वस्त्र धारित सन्त श्री जैसे ही लगभग ६० फुटे ऊँचे सीधे खड़े स्तम्भ पर चढ़ने लगे एक हाथ में प्रेम प्रकाश पन्थ की ध्वजा व दूसरे हाथ में झोला लटकाये अपने कदमों को जैसे ही वह सीढ़ियों पर रखते हुये ऊपर बढ़ने लगे सम्पूर्ण प्रेमीगण एकाकी नजर से उन्हें देखने लगे।

सम्पूर्ण श्री दरबार उसका बाहरी परिसर छतें सभी स्थल प्रेमीयों से खचाखच भरे हुये थे। प्रेमीयों के नयन स्तम्भ की भाँति बस संत श्री को धीरे–धीरे ऊपर चढ़ते हुये देख रहे थे। लगभग १० मिनट के अन्तराल बाद संत श्री ध्वजा स्तम्भ के ऊपर शिखर पर पहुँच चुके थे। उन्होंने जैसे ही प्रेम प्रकाश ध्वजा को ध्वजा स्तम्भ पर स्थापित किया। तो श्रद्धालुओं के नेत्र इस अविस्मरणीय व दुर्लभ दृश्य को हृदय में चिन्हित करने लगे, कैमरा मैन भी इन दृश्यों को कैद करने में व्यस्त हो गये।

संत श्री ने ध्वजा स्तम्भ पर श्रीफल व माला चढ़ाई और उन्होंने जैसे ही पुष्पों की वर्षा की तो नजारा बड़ा ही अलौकिक लगने लगा, जिसका वर्णन इस लेखनी के बस की बात ही नहीं। इसका अनुभव तो साक्षात् उपस्थित होने वाले को ही हो सकता है। गुरु महाराज की जय जयकार के उदघोष व तालियों की गड़गड़ाहट मिलकर एक मधुर धुनि को स्वरित कर रही थी तथा सन्तगणों द्वारा ये भजन **"हम गीत सनातन गाऐंगे, सांई टेऊँराम तुहिंजो झण्डो झूले"** भजन गाया तो प्रेमीगण आनन्दित होकर इस मधुर भजन के स्वर में स्वर मिलाकर अपनी खुशी का इजहार कर रहे थे। तत्पश्चात् सन्तों ने **"मुहिंजो सत्गुरु टेऊँराम आ - दण्डो वारो"** की धुनि गाई तो एक तो सन्तों की मधुर आवाज व दूसरा बैण्ड वादक भी इसमें अपने स्वर को मिलाने लगे तो फिर प्रेमीगण कहा पीछे रहने वाले थे। हाथों से करताल पैरों से नृत्य करते हुये भाव–विभोर होकर प्रेमीगण इन धुनियों के प्रवाह में ऐसे डूबे कि पता ही नहीं चला कि कब एक घण्टा हो गया।

सूर्य भगवान की प्रचण्डता व समय की गति को देखते हुये महाराज श्री ने आरती का आदेश दिया। आरती व पल्लव के बाद आम़ भण्डारा हुआ। जिसके बाद सेवाधारी व्यस्त हो गऐ शाम को निकलने वाले जुलूस की तैयारी में।

शोभायात्रा :- चैत्र मेले के प्रथम दिन का एक मुख्य कार्यक्रम होता है शोभायात्रा। लगभग दोपहर ३:३० बजे एक विशाल काफिला श्री दरबार से शुरू हुआ। शोभायात्रा के आरम्भ में २ गजराज अगवानी करते चल रहे थे। थोड़े ऊँट व अश्व और २४ रथों की शोभायात्रा के शुरू होने के साथ ही श्री दरबार के अन्दर बाहर का वातावरण भक्तिमय हो गया जितनी भीड़ शोभायात्रा के बाहर चल रही थी करीब उतनी ही भीड़ मन्दिर के अन्दर सद्गुरु महाराज की जय जयकार कर रही थी।

आगे–आगे हाथी घोड़े का लवाजमा व उसके पश्चात् रिद्धी–सिद्धी कर्ता भगवान गणेश जी की झांकी चल रही थीं सुन्दर बैण्ड **"जग में सुन्दर है दो नाम चाहे कृष्ण कहो या श्याम"** के गीत की मधुर धुन बजा रही थी। उनके पीछे हमारे वर्तमान प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज पूज्य सन्त मण्डल के साथ पैदल चल रहे थे।

पीछे–पीछे गोविन्द देव जी मन्दिर की झांकी, सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज और सद्गुरु हरिदास राम जी महाराज सहित अनेक सन्तों भगवान शंकर, विष्णु की झाँकियाँ शामिल थीं। इन सब झाँकियों में आकर्षण का केन्द्र थी राम जी की सेना, श्री राम की झांकी के आगे हनुमान जी, वानर सेना के लाल लंगोट और हाथ में गदा लिए शत्रु का नाश करने के लिये उछलते कूदते चल रहे

थे। इस झांकी के पास बच्चों का भारी हुजूम था।

जैसे ही यात्रा की गति धीमी होती तो सेना के वानर विभिन्न करतब दिखाने लगते। वहीं इसके पीछे जोकर उछलते–कूदते प्रेमियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये विभिन्न करतब दिखा रहे थे।

इस चल शोभा यात्रा में भगवान झूलेलाल जी का सुसज्जित रथ के अलावा संत कवरराम जी का रूप धर कर बैठा प्रेमी भी भक्तगणों का ध्यान अपनी ओर खींच रहा था। इसी के साथ–साथ रायपुर, भोपाल, ब्यावर, आगरा और जयपुर के अनेक शहरों सहित सत्नाम साक्षी मन्दिर लासपालमास स्पेन का रथ भी शामिल था। वहीं भगवान शिव व श्री कृष्ण का रूप धर कर चल रहे गुणीजनों की जय जयकार करते प्रेमीगण बढ़े चले जा रहे थे। और फिर जिया बैण्ड व उसके पश्चात् संत मोनूराम जी के नेतृत्व में हरिनाम संकीर्तन का चौपहिया वाहन चला जा रहा था।

एक चौपहिया वाहन जिसको कि पुष्पों, लताओं व विभिन्न प्रकार के सजावटी सामान से सजाकर बहुत ही आकर्षक बनाया गया था। इस आकर्षक व मनोहरकारी रथ के केन्द्र में विराजित थी लगभग १.५ फुट की संगमरमर की आचार्य स्वामी टेऊँराम जी की प्रतिमा। इस प्रतिमा पर लगी पुष्पों की माला भगवान शंकर जी के साथ–साथ शोभित होने वाली गगन जी के समान हो रही थी।

''भज-गोविन्दम् बालमुकन्दम सर्वानदंम् हरे-हरे, जय जय राधा रमण हरि बोल'' की मधुरकारी धुनि में इतना सम्मोहन था कि इसका अनुभव तो इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रेमीगण तो प्रेमीगण पर राह चलते राहगीर भी मूर्तिवत् स्तम्भित होकर इस रथ को जिज्ञासु की भांति देखते हुये करताल करते हुये धुनियाँ उच्चरित कर रहे थे। मंत्र–मुग्ध होकर अंत में इस रथ के पीछे थीं मातायें बहनें व प्रेमी।

इतनी आकर्षक शोभायात्रा जब दरबार से आरम्भ हुई तो प्रेमीगण भी तन मन से इस यात्रा में शामिल हो गये। शोभायात्रा में बच्चे नर नारी सभी नाचते गाते ''राधे-राधे गोविन्द राधे व सतनाम् साक्षी'' महान मंत्र का सुमरण करते चल रहे थे। चैत्र की तपती दोपहरी में गुरुमहाराज जी ताप की परवाह किये बिना चले जा रहे थे। गेरूए वस्त्र धारित महाराज श्री व उनके पास श्वेत वस्त्र धारण किये सन्त मण्डल ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो जैसे भगवान सूर्य देव के साथ किरणें शोभायमान होती हैं और इन सूर्यदेव व उसकी किरणों को चारों और से घेर कर रखा था श्रद्धालुओं ने कितना मनोहरकारी दृश्य था।

जैसे–जैसे शोभायात्रा आगे बढ़ती प्रेमियों की सख्या बढ़ती जा रही थी। इसका आभास तो इस बात से लगाया जा सकता है कि शोभायात्रा का एक छोर सिन्धी कैम्प में था तो दूसरा चांदपोल सर्किल पर। इस शोभायात्रा में जगह–जगह प्रसाद व शीतल जल की स्टालें लगाई गई थीं। शोभायात्रा जैसे–जैसे आगे बढ़ रही थी तो पुरुष व माताओं का उत्साह और भी ज्यादा बढ़ने लगा था। ८२ वें चैत्र मेले के उपलक्ष्य में सत्नाम साक्षी रचित ८२०० गैस के गुब्बारे आकाश में छोड़े गये। इस शोभायात्रा का जगह–जगह भव्य स्वागत हुआ। जगह–जगह स्वामी जी व सन्त मण्डल का माल्यार्पण व आरती उतारकर अभिनन्दन हुआ।

वहीं बड़ी चौपड़ पर श्रद्धालुओं ने स्वामी जी का राजस्थानी साफा पहनाकर स्वागत किया। स्वामी जी के मस्तक पर जब साफा रखा गया तो महाराज जी के मुखमण्डल की आभा प्रेमीगण को और अधिक आकर्षक लगी। इस शोभायात्रा में श्रद्धालुगण नृत्य करते चल रहे थे। श्रद्धालु प्रेम के प्रवाह में इतने अधिक रम गये थे कि जेसे ही एक समूह रूकता दूसरा समूह अधिक उत्साह से छेज नृत्य करने लगता।

वहीं जौहरी बाजार में शोभायात्रा का स्वागत पुष्पवर्षा से किया गया। फल मण्डी के सामने लगभग ३० फुट ऊँची रंग–बिरंगी बर्फ की झांकी जिसमें गणेश जी, शिवलिंग व सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की झांकी सजाई गई थी। इसमें शिवजी की जटाओं से गंगा की धारा प्रवाहित हो रही थी। इतना आकर्षक दृश्य देखने के लिये प्रेमी बरबस रूक गये थे। करीब पाँच घण्टे तक निकली शोभा यात्रा पोलो विक्ट्री, चांदपोल, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, सागांनेरी गेट, न्यूगेट, नेहरु बाजार, इन्दिरा बाजार, सिंह द्वार और पांच बती होती हुई वापस अमरापुर स्थान पर आकर विसर्जित हुई। श्री दरबार में शोभायात्रा के विर्सजन

पर भव्य आतिशबाजी की तैयारी की गई थी। आतिशबाजी जैसे ही आरम्भ हुई। भक्तगण देखने के लिये लालायित हो उठे। कितनी ना आकर्षक थी। रंग–बिरंगी आतिशबाजी देखने लायक थी। लगभग आधे घण्टे की आतिशबाजी के बाद सभी भक्तगण व सन्त सत्संग हाल में इकट्ठे हुये और फिर सन्तगणों ने मिलकर मेले के उपलक्ष्य में शुद्ध मावे का केक काट कर सन्तों व संगत का मुंह मीठा कराया। स्वामी जी ने अपने अमृत वचन से पल्लव पाकर मेले का विधिवत शुभारम्भ किया।

१६ अप्रैल २००३, बुधवार : चैत्र मेले का दूसरा दिन बुधवार, बाहर प्रवेश द्वार के पास श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा खाद्य सामग्री की स्टाल लगाई गई थी। इस दिन की भी शुरुआत प्रातःकालीन प्रार्थना के साथ हुई। प्रातः ७ से ११ बजे तक विभिन्न संतों ने अपने ज्ञान की वर्खा से प्रेमियों को सरोबार किया। प्रातः स्वामी जी ने अपने कर कमलों से **''प्रेम प्रकाश सन्देश के नाम महिमा अंक के विशेषांक''** का विमोचन किया।

इसी प्रकार सांय ३ से ६ बजे तक विभिन्न भगत मण्डलियों में जिसमें भगत किशनचन्द, भगत प्रतापराय, लक्ष्मीचन्द कव्वाल, कल्लू भगत वीरभान आदि प्रमुख भगतों ने सत्संग किया। इसके पश्चात् स्वामी जी ने अपने मुख से जैसे ही सत्नाम साक्षी व गुरुमहाराज की जय जयकार करते हुये अपने प्रवचनों की वर्खा शुरु की तो पूरा सत्संग परिसर प्रेमियों से खचाखच भर गया। सर्वत्र शांति व्याप्त होगई, केवल महाराज श्री के मधुर स्वर का पता चल रहा था अन्त में धुनि लगाकर इस दिवस की समाप्ति हुई और भण्डारा हुआ।

१७ अप्रैल २००३, गुरूवार : आज प्रेमीगण श्री दरबार आकर दुहरा लाभ उठाने के लिये लालायित हो रहे थे। एक तो चैत्र मेले का तीसरा दिन दूसरा सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के परम अवतरण का दिन गुरुवार।

श्री दरबार की परम्परा अनुसार प्रातःकालीन प्रार्थना से सत्संग की शुरुआत हुई गुरु प्रार्थना का पाठ जो कि दरबार का नियम है गुरुवार व शनिवार को प्रार्थना का पाठ होता है। तत्पश्चात् जैसे ही गुरुमहाराज ने अपने अमृत प्रवचनों को शुरु किया तो प्रेमीगण अपने ह्वदय को महाराज श्री के वचनों से सराबोर करने के लिये कौतुहल वश सत्संग मंच की और देखने लगे। महाराज श्री जी ने अपने ज्ञान की वर्षा से प्रेमियों को कृतार्थ किया इसके पूर्व संत हंस प्रकाश, संत दया प्रकाश, संत झामनदास, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज और स्वामी स्वयंप्रकाश जी महाराज ने भी सत्संग किया।

इस तरह सांय ३ से ६ बजे तक सत्संग की गंगा पुनः शुरु हुई। जिसमें हिसार मण्डल, ब्यावर मण्डली, दिल्ली मण्डली, दादी चेताबाई व दादी वसी बाई, कमला केसवानी ने महाराज श्री की महिमा का गुणगान किया। उसके बाद गुरुनानक कॉलोनी की तीन नन्हीं बालिकाओं ने दीक्षा खेतानी ने **''स्वामी टेऊँराम जी''** का वेश धरकर **''अमां-मुखे मोकल द्दे''** दिव्या रायसिंघानी ने **''संत कवरराम''** का स्वांग रचाकर **''कींय रीझायां तोखे कींयं परचायां''** तथा मेनका मेहरचन्दानी ने **दमादम झूलण सांई** नामक भजन में इतनी अच्छी प्रस्तुति दी की प्रेमी भाव विभोर होकर बालिकाओं को निहारने लगे। स्वामी जी ने भी अपने वरद हस्त से उनको आशीर्वाद प्रदान किया।

इसीदिन स्वामी हरिदासराम जी महाराज द्वारा रचित **सत्य की खोज, नित्य नियम प्रार्थना व गुरुवन्दना** की पुस्तक का और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों द्वारा स्वारित पांच ओडियो कैसेट, सीडी **''स्वामी टेऊँराम चालीसा, स्वामी सर्वानन्द चालीसा, गुरु प्रार्थना, सत्नाम साक्षी सर्व आधार, स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी** नामक कैसेट का विमोचन हुआ।

१८ अप्रैल २००३, शुक्रवार : रोज प्रातः कालीन व सायंकालीन सत्संग गंगा निरन्तर बही चली जा रही थी। १२ बजे से २ बजे के विश्राम काल को छोड़कर रात्रि ६ बजे तक ये गंगा चलती जिसमें आकर प्रेमीगण अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थे। प्रतिदिन होती पुष्पों की नयनाभिराम सजावट श्री समाधि स्थल व श्री मन्दिर में रोजाना श्रृंगार करके नूतन वस्त्र से आकर्षक लगती श्री लक्ष्मीनारायण व आचार्य श्री की प्रतिमायें। जिसको देखकर हर रोज प्रेमियों को एक आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती।

प्रातः कालीन सत्संग गंगा और विश्राम काल को छोड़ कर पुनः शुरु हुई सायंकालीन सत्संग वर्खा। स्वामी जी की आभा भी कम नहीं होती थी। इतने बड़े मेले का संचालन करना, सभी बातों का ध्यान रखना, बाहर से आये लगभग हजारो प्रेमियों को आवासीय सुविधा व अन्य सुविधायें उपलब्ध करना, एक–एक बातों का निरीक्षण स्वामी

जी स्वयं कर रहे थे। पर जब भी स्वामी जी के मुखमण्डल पर ध्यान जाता तो उनके मुखमण्डल की आभा और अधिक आकर्षक लगती थी। स्वामी जी को जब सत्संग मंच पर देखते तो ऐसा लगता मानो तारों में चन्द्रमा उदयकारी हो रहे हैं। इसी दिन **श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा महाराज श्री व अन्य सन्तगणों का पुष्पों व नोटों की माला पहनाकर भव्य स्वागत किया।** बैण्ड वादक तथा अन्य लवाजमा वालों को पाखर पहनाकर आशीर्वाद दिया पूज्य स्वामी जी ने। आज **जयपुर के सम्पूर्ण सिन्धी समाज की टेलीफोन निर्देशिका का विमोचन** हुआ। इस निर्देशिका में जयपुर के १० हजार सिन्धियों के टेलीफोन नम्बर व पतों की जानकारी थी। इसके साथ ही **प्रेम प्रकाश सन्देश के सम्पूर्ण सदस्यों में से ५ पर्चियां निकाल कर पाँच भाग्यशाली प्रेमियों को सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के चित्र युक्त सोने के लॉकेट उपहार स्वरूप दिये जाने की घोषणा हुई।**

१६ अप्रैल २००३, शनिवार : हर रोज सत्संग ज्ञान गंगा का सिलसिला चलता जा रहा था और नित्य प्रेमीगण इस सत्संग गंगा में आकर डुबकी लगा रहे थे। समय का भान न तो प्रेमियों को था और न ही सन्तगणों को। पर समय तो अविरल अपनी गति से बढ़ता जा रहा था। आखिर अन्तिम व महत्वपूर्ण पल्लव का दिन आ ही गया।

आज ब्रह्मबेला में प्रातः ४ बजे से इस दिन की सत्संग ज्ञान गंगा शुरु हुई। विभिन्न स्थानों से आये संतगणों ने ब्रह्मवेला में प्रेमियों को हरि नाम का अमृत पिलाया। प्रातः ५ बजे तक सम्पूर्ण श्री दरबार प्रेमियों से खचाखच भर गया। पल्लव का समय प्रातः ६ बजे का था। जैसे–जैसे ६ बजने जा रहे थे, प्रेमियों का काफिला बढ़ता ही जा रहा था। श्री दरबार के सम्पूर्ण परिसर प्रेमियों से खचाखच भरे हुये थे। साथ–साथ विश्राम स्थल व छतों पर प्रेमियों को स्क्रीन लगाकर सत्संग का सीधा प्रसारण दिखाया जा रहा था। यहां तक कि मुख्य द्वार के बाहर सड़क तक प्रेमी शान्तचित एकाग्र भाव से सत्संग श्रवण करते दृष्टिगत हो रहे थे।

सत्संग स्थल के साथ–साथ मन्दिर व समाधि स्थल भी प्रेमियों से भर गये श्री दरबार का एक भी कोना खाली न था। घड़ी की बढ़ती सुई से आखिर पल्लव का समय आ गया। पूरा सत्संग परिसर भक्तगणों व सत्संग मंच सन्तों से शोभित हो रहा था। घड़ी के ६ बजते ही स्वामी जी ने अपने मुखारबिन्दु से अमृत वचनों को शुरु किया तो चारों और शान्ति ही शान्ति व्याप्त हो गई। केवल स्वामी जी की मधुर धुनि श्रद्धालुगण के कानों में अमृत रस घोलने लगी स्वामी जी ने बताया कि–

सद्गुरु तुम पूरण करो मेरी यह अर्दास।
कहे टेऊँ मन में कभी रहे ना जग की आस।।

भजन- मेहरबान कर मेहर इहाई, मन में ना कोई मान रहे।
सत्गुरु पाण वद्दनि खे, निवड़ी सीस निवायां मां।
ईश्वर ईहाकर आसीसा, तुहिंजा गुण नित गायां मां।

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी में बताते हैं कि दुख का कारण मन की तृष्णा आशा है जो कभी पूरी होने वाली नहीं है।

संत श्री कहते है कि आशा तृष्णा का कोई अन्तिम छोर नहीं है। शरीर समाप्त होता है पर इच्छायें समाप्त नहीं होती। संत महात्मा आकर इस जीवन में खुद तो परमात्मा को प्राप्त करते हैं। परन्तु दूसरों को भी इच्छाओं को समाप्त करके परमात्मा से मिलने का रास्ता बताते हैं।

हमें कभी ऐसी इच्छा क्यों नहीं होती कि हम भी परमात्म मिलन करें। हमें दुख प्राप्त हो या केवल सुख चाहिये। संसार के भोग पदार्थों में थोड़ा सुख होता है फिर दुख ही है। परन्तु हमें तो सुख ही लगता है हमें सुख की अच्छी तरह परिभाषा नहीं आती हैं जैसे कोई मटका विष से भरा हुआ है परन्तु उसके ढक्कन पर थोड़ा सा अमृत है उसी प्रकार संसार विषय से भरा है परन्तु थोड़ा सा सुख है उसको प्राप्त करने के लिये हम तड़पते हैं।

महाराज श्री भगवान से मांगते **''कहे टेऊँ मन में कभी रहे न जग की आस''** संसार के विषय भोग की इच्छा समाप्त हो जायें। बहुत ही दुर्लभतम मनुष्य जीवन मिला है। विषय वासना को अलग किये बिना सुखशांति आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी।

भजन- विषय के विष से भरे, जग के झूठे प्याले।
सुख की झलक पहले परिणाम में दुख वाले।
नहीं इनकी तनिक आशा, प्रभु प्रेम का जाम मिले।
अभिलाषा यही मन में तेरा पावन नाम मिले।
संसार मिले न मिले, सत्गुरु सुख धाम मिले।

आइये हम भी सतगुरु महाराज से इस चैत्र मेले के प्रसाद रूप में मांगते हैं इच्छाओं व तृष्णा की समाप्ति के लिये परमात्मा का नाम सुमरण करें। सदबुद्धि व सुमति

का दान मांगे यही मांगे कि सबके मन की शुभ भावना पूरी हो। इस प्रकार आचार्य श्री के आशीर्वाद के साथ महाराज श्री की अध्यक्षता में पल्लव पाकर इस दिव्यकारी मेले की समाप्ति हुई। मेले के निर्विध्न व सूख पुर्वक समाप्ति पर महाराज श्री ने सभी भक्तजनों को बधाई दी और शुरु हुआ मधुर शहनाई वादन इसके अन्तर्गत सन्तों ने धुनि उच्चरित की।

जहिंजो नालो टेऊँराम आ - द्रण्डे वारो।
जहिंजो पिता चेलाराम आ - द्रण्डे वारो।
जहिंजो गुरु आसूराम आ - द्रण्डे वारो।

कितना आनन्दमय दृश्य है। मंच पर सन्तगण हाथों को उठाये व नीचे प्रेमीगण हाथों से करतल व पैरो से नृत्य करने में तल्लीन हो गये।

अहो ! आनन्द ही आनन्द ! इसका वर्णन इस कलम के बस की बात नहीं है। तत्पश्चात् परम्परानुसार सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज की प्रतिमा को उठाकर सम्पूर्ण श्री दरबार की तीन परिक्रमा लगाई गई और अन्त में सन्त श्री ने अपनी अंगुली को तीन बार उठाकर शिवोऽम की धुनि लगाकर इस दिव्यकारी महान चैत्र मेले की समाप्ति की और प्रेमीगण बुझे मन टूटते कदमों से अपने-अपने स्थल की और रवाना हुये।

गुड़िया भरत जेठवानी (जयपुर) एवं कार्यालय डेस्क से

करे दया गुर ड्रियो दिलदारी (सत्संग-वर्खा-भाग-२७)

।।सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज।।

विगत दिनों प्रेमावतार भगवान कृष्ण की नगरी श्री वृन्दावन धाम में, हमारे प्रेम और आनन्द की मूर्ति सद्गुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज का वार्षिक मेला (स्वामी शान्ति प्रकाश सेवा धाम) के शुभ अवसर पर श्री गुरु महाराज की इस कैसेट (करे दया गुरु ड्रियो दिलदारी) भाग २७ को लोकार्पित किया गया। श्री गुरु महाराज जी की ओजस्वी वाणी उस पर प्रार्थना का भजन जैसे सोने पे सुहागा मन मोहक अंदाज मोहनी आवाज में बड़े ही सरल एवं सुबोध भाषा में प्रवचन अमृत सम्मिलित है। सत्संग वर्खा २६ भाग पहले ही प्रेमियों को उपलब्ध हो चुके हैं। २७ व भाग सत्संग वर्खा उससे आगे की कड़ी है। मूल्य १० रु.।

प्राप्ति स्थान : **प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हास नगर व सभी प्रमुख आश्रम**

सूचना :- सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज जी के महिमा भजन प्रेमियों को उपलब्ध है। महिमा भजन भाग-२ प्रेम प्रकाश आश्रम सूरत से निकालने की योजना प्रारम्भ हो चुकी है। सो समस्त गुणीजन, कवियों से हृदयपूर्ण प्रार्थना है। सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज से सम्बन्धित भजन कवित शायरी इत्यादि जो भी एकत्रित हैं। उन्हें इस पते पर भेजने की कृपा करें।

पता :- **स्वामी टेऊँराम मन्दिर ट्रस्ट, राम नगर, रान्देर रोड, सूरत (गुजरात)**

विशेष सूचना

समस्त प्रेम प्रकाश मण्डलियों -- आश्रमों-प्रेमियों से प्रार्थना है कि जब जब आपको नगर में आश्रम में पूज्य सद्गुरु महाराज जी का (आगमन) सत्संग कार्यक्रम होता है, उस समय के कार्यक्रम की वीडियो केसेट्स आप कार्यक्रम सम्पन्न होने के तुरन्त बाद मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान एम.आई. रोड, जयपुर सन्त मोनूराम जी के पास भिजवाने की कृपा करें। सी. डी. न भेजे, वीडियो केसिट ही भेजें। ताकि उसका सम्पादन कर शीघ्र ही संस्कार चैनल पर प्रसारित किया जा सके। अधिक जानकारी 0141-2372423, 2372424 पर प्राप्त की जा सकती है।

सद्गुरु महाराज के सत्संग - दर्शन संस्कार चैनल

प्रत्येक रविवार, दोपहर ३ से ३:३० बजे तक ४, ११, १८ मई को चैत्र मेला। २५ मई गाँधी धाम गुजरात विविध यात्रा। १ व ८ जून २००३ पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की अमृतवाणी।

सद्गुरू महाराज के आगमन से इन्दौर आश्रम के प्रेमियों में अपार उल्लास

(२४ अप्रैल से २६ अप्रैल २००३ तक)

इन्दौर। श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली के साथ चैत्र मेले के पश्चात् २३ अप्रैल को एकदिवसीय यात्रा पर देवास पहुँचे। देवास पहुँचने पर स्थानीय सिन्धी समाज व प्रेम प्रकाश मण्डली द्वारा पूज्य स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया गया। यहाँ पर स्थानीय प्रेमियों को भगवन्नाम का अमृत पिलाते हुए प्रेमियों को आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज के बताये हुए मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करने की प्रेरणा की। २४ अप्रैल को इन्दौर आश्रम के व्यवस्थापक सन्त शम्भूलाल जी के नेतृत्व में उत्साही प्रेमियों नवयुवकों द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली को इन्दौर मेले के लिये अगवानी करते हुए पूज्य स्वामी जी को चलने की प्रार्थना की। प्रातः गाडियों के काफिले के साथ पूज्य स्वामी जी देवास से **इन्दौर** के लिये रवाना हुए। इन्दौर नाके पर पहुँचने पर पूर्व में ही प्रतीक्षारत सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुजन नवयुवक पूज्य स्वामी जी के दर्शन पाते ही भाव विह्वल होकर ढोल मंजीरो की आवाज में सद्गुरु भगवान के जयकारे के साथ नाचने लग गये। यहाँ से गाड़ियों व मोटर साईकिलों, स्कूटरों की रैली के साथ पूज्य स्वामी जी को इन्दौर आश्रम पर लाया गया। जहाँ पर प्रतीक्षारत अपार संख्या में महिलाओं ने गगन भेदी जय जयकार व पुष्प वर्षा के साथ पूज्य स्वामी जी का अभिनन्दन किया।

२४ अप्रैल से २६ अप्रैल प्रेम प्रकाश आश्रम काटजू कॉलोनी में विशाल जन समुदाय के मध्य आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के संत मण्डली के सन्त मुरलीधर जी, सन्त गंगाराम जी व सन्त चेतन प्रकाश जी महाराज की पुण्य तिथि महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। २४ अप्रैल प्रातः कालीन सत्संग सभा के उपरान्त श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्री मद्भगवत् गीता का पाठ आरम्भ किया गया। तत्पश्चात् सभी सन्तों महात्माओं के मध्य उपस्थित सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व ब्राह्मण देव की व प्रेमी भक्तों की अपार उपस्थिति में हवन यज्ञ कर ध्वजावन्दन किया गया। इसी पुण्य तिथि महोत्सव के मध्य इन्दौर में हुए **अखिल भारतीय सिन्धी साधु सम्मेलन की विशाल रैली प्रेम प्रकाश आश्रम से निकाली गयी** ३०० से भी अधिक सन्तों महात्माओं के समूह वहाँ उपस्थित रहे व उनका स्वागत सत्कार किया गया। सांयकाल ५ बजे विशाल रैली निकाली गयी। पंच दिवसीय पुण्य तिथि महोत्सव में भोपाल ग्वालियर देवास उज्जैन भुसावल आदि अनेक स्थानों से प्रेमियों ने भाग लिया। **२७ अप्रैल को प्रातः कालीन प्रभातफेरी** में अपार जनसमूह उपस्थित रहा, हरिनाम संकीर्तन व सद्गुरु भगवान की जयकार करते हुए फूलों मालाओं से जगह–जगह पर हार्दिक स्वागत किया गया। लगभग 2½ घण्टे प्रभातफेरी का आनन्द प्रेमियों द्वारा लेते हुए नाम कीर्तन धुनी का आनन्द लेते हुए ८ बजे समापन हुआ अन्तिम दिवस २६ अप्रैल को प्रातःकालीन सत्संग सभा ८ बजे से शुरु हुई, प्रथम प्रार्थना तत्पश्चात् सन्त श्री मुक्त, सन्त झामनदास, सन्त शंकरलाल, सन्त हरीओम लाल, सन्त नामदेव जी महाराज द्वारा मधुर गीतों उपदेशों से सारी संगति को अमृत पान कराया, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ पाठ व श्री मद्भगवत् गी[illegible] का भोग सन्त नामदेव जी व सन्त हरीओम द्वारा पाया गया। तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा सन्त महिमा नाम महिमा मानव जीवन के प्रमुख लक्ष्य भगवत् प्राप्ति की प्रधानता बतलाते हुय सत्संग समापन किया, तत्पश्चात् भगवान व गुरुदेव भगवान् की आरतीयाँ की गई व आम भण्डारा किया गया। दोपहर ४ बजे भण्डारा पूर्ण होकर शाम सत्संग की सभा का आरम्भ हुआ जिसमें नवयुवक मण्डल के प्रेमियों व महिला मण्डल ने मधुर गीतों द्वारा सारी संगत ने आनन्द का स्वाद लेते हुए सन्त नरेशलाल सन्त शम्भूलाल सन्त हरीओमलाल व पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सारगंर्भित ओजस्वी अमृतवर्षा के साथ सत्संग की पूर्णता की गयी। प्रेम प्रकाश मण्डल की प्रमुख पत्रिका प्रेम प्रकाश सन्देश के अर्न्तगत बने इन्दौर निवासी भक्तों के ग्राहक पत्रिका प्रेमियों की इनामी योजना अर्न्तगत ६ प्रेमियों को हाथ घड़ी इनाम स्वरूप श्री गुरु

महाराज के कर कमलों से दी गयी। २८ अप्रैल को सायंकालीन सत्संग सभा में इन्दौर की जनता की ओर से महापोर श्री कैलाश कुमार विजयवर्गीय द्वारा पूज्य गुरु महाराज जी व सन्त मण्डल का स्वागत कर तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य अभिनन्दन किया गया। क्षेत्रीय पार्षद श्री शंकरलाल लालवानी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

रतलाम के नये आश्रम में सत्संगानन्द

(३० अप्रैल से १ मई २००३)

इन्दौर से लगभग चार घण्टे सड़क मार्ग से चलकर कार द्वारा सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली समेत व प्रेमियों के समूह के साथ रतलाम पहुँचे जहाँ पर शास्त्री नगर स्थित प्रेम प्रकाश अश्रम नवनिर्मित स्थान पर पूज्य गुरुवर पधारे, अपार प्रेमी भक्त जय जयकार मनाते हुए शहनाई द्वारा नाचते गाते प्रेमी श्री मनोहरलाल के घर पर पधारे, सत्संग का आयोजन आश्रम पर रखा गया। शाम को ४ से ७ बजे व प्रातः काल ८ से १० तक सत्संग कार्यक्रम रहा, गुरु महाराज के नवनिर्मित आश्रम की महिमा करते हुए सन्त हरीओमलाल ने बताया कि मन्दिर आश्रम तीर्थ है। जहाँ साधु सन्तों द्वारा ज्ञान गंगा का अमृत पान कराकर हजारों का कल्याण किया जाता हैं।

तीर्थ दो प्रकार के होते हैं **चल पुनि अचल पछान** गंगा आदिक अचल है चल है सन्त सुजान निश्काम कर्म जो श्रद्धा प्रेम, सहित किये जाते हैं उनसे जीव परमात्मा को पा लेना है। सन्त गुरु परमात्मा प्रेम व नेम पर राजी होते हैं।

श्री गुरु महाराज के पावन स्थान स्वामी टेऊँराम आश्रम पर पूज्य स्वामी गुरुवर भगत प्रकाश जी महाराज ने सत्संग करते हुए कहा कि–

प्रेम बिना पहुँचे नहीं को जन हरि के धाम।
कहे टेऊँ तांते जपो प्रेम सहित हरिनाम।

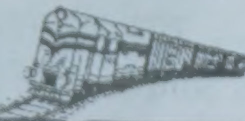
मीरा सुन्दर शाम चयो,
जहर मां थी अमृत वयो।
अहिड़ो विश्वास धारीदें,
बेड़ो पहिंजो तू तारीन्दे।

श्रेष्ठ विचार रखन्दे मन खे नाम खे लगाईन्दे श्रेष्ठ कर्म कन्दे जीव परमात्मा खे पाईन्दो।

अन्तः में श्री गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा जन्मदिवस शनिवार को सत्संग का अमृत प्रेमियों का पिलाते हुए बताया कि रविवार को प्रेमियों द्वारा कीर्तन भजन किया जाय। आगे आने वाले समय में आश्रम में मूर्ति स्थापना के साथ आश्रम का उद्घाटन करने का विचार किया व रतलाम यात्रा पूर्ण कर दिल्ली के लिये प्रस्थान किया।

प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली के वार्षिकोत्सव में लिया दिल्ली वासियों ने दिव्यानन्द

भारत की राजधानी दिल्ली के मलिकागंज में स्थापित श्री प्रेम प्रकाश धाम का वार्षिक महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में स्वामी जयदेव जी महाराज की व्यवस्था अर्न्तगत कई महानगरों से पधारे सन्तों, महापुरुषों ने भी भाग लिया। इस पंच दिवसीय महान यज्ञ में सन्त श्री नामदेव जी, सन्त हरीओमलाल जी, सन्त श्री मुक्त, भक्त वीरभान, गायक रेडियो सिंगर भक्त मूलचन्द, सन्त नरेशलाल, सन्त शम्भूलाल, सन्त हरीश कुमार व दिल्ली के अनेक गायक कलाकारों ने सत्संग की अमृत वर्खा कर आनन्द प्रदान किया। पूज्य स्वामी जयप्रकाश जी महाराज जिनकी तपस्थली स्थान पर यह आश्रम प्रथम एक झोपड़ी के स्वरूप में था जो कि अब एक विशाल प्रेम प्रकाश धाम का रूप लिये हैं. इसी स्थान के परिसर क्षेत्र को स्वामी जयप्रकाश मार्ग के नाम से यथोचित नामकरण नगर निगम के अधिकारी मंडल द्वारा किया गया है। इस अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री जगदीश टाईटलर, क्षेत्रीय विधायक सुन्दरपाल जी (बिट्टू), पार्षद आनन्द साहब, हरिसिंह जोशी, अनिल कुमार, जसवन्त सिंह जी, स्वतंत्र कुमार, सतीश पाहवा, बी.के. चौधरी, नरेन्द्रपाल जी, श्री परसराम जी (कमला नगर, सिन्धी पंचायत) आदि वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्तों का फूल मालाओं से हार्दिक स्वागत किया गया व गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा पाखर पहिना कर उत्साहित जन प्रतिनिधियों को आशीर्वाद किया। इस वार्षिक उत्सव के अन्तिम दिवस पर सन्त शिरोमणी वयोवृद्ध स्वामी स्वयंप्रकाश जी महाराज व सन्त मोनूराम जी व अन्य कईप्रेमी जयपुर (राज.) से पधारे।


श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष



पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्‌गुरु हरिदासराम जयन्ती)	0512–2215747
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	0532–2655214
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	0542–225585
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	05278–246159
24 मई	2003	तक	बस्ती (उ.प्र.)	098290–14850
25 मई से 26 मई	2003	तक	गोरखपुर	098290–14850
27 मई	2003	तक	बइराईच	098290–14850
28 मई	2003	तक	यात्रा कानपुर से हा. जोध. एक्स. में	098290–14850
29 मई से 1 जून	2003	तक	जयपुर	0141–2372424, 2372423
2 जून से 5 जून	2003	तक	आदर्श नगर, अजमेर	0145–2441850, 098290–14850
6 जून	2003	तक	जयपुर	0141–2372424, 2372423
7 जून से 11 जून	2003	तक	खैरथल	01460–2441850, 098290–14850
12 जून से 14 जून	2003	तक	सीकर	098290–14850
15 जून से 19 जून	2003	तक	जयपुर	0141–2372424, 2372423
20 जून	2003	तक	यात्रा	098290–14850
21 जून से 25 जून	2003	तक	मुम्बई	022–26057711, 26057579
26 जून से 29 जून	2003	तक	अहमदनगर	098290–14850
30 जून	2003	तक	यात्रा	098290–14850
1 जुलाई	2003	तक	जयपुर	0141–2372423, 2372424
2 जुलाई से 5 जुलाई	2003	तक	अजमेर (दिल्ली गेट)	098290–14850
6 जुलाई से 30 जुलाई	2003	तक	जयपुर, हरिद्वार	098290–14850
1.अगस्त से 31 अगस्त	2003	तक	नासिक	0253–2513415, 098290–14850

तीज त्यौहार

16	मई	2003	शुक्रवार	श्री सत्यनारायण-पूर्णिमा (स्नान दान की), सद्‌गुरु हरिदासराम प्राकट्य दिवस, जन्मोत्सव समारोह समापन
19	मई	2003	सोमवार	श्री गणेश चौथ व्रत
26	मई	2003	सोमवार	श्री अचला एकादशी व्रत
30	मई	2003	शुक्रवार	श्राद्ध की पितृवती अमावस्या
31	मई	2003	शनिवार	स्नानदान की अमावस्या, सूर्य ग्रहण
1	जून	2003	रविवार	चन्द्रदर्शन, आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वर्सीउत्सव शुरू (सभी आश्रमों में)
5	जून	2003	गुरूवार	चौथ, आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव (वर्सी समापन)
9	जून	2003	सोमवार	श्री गंगा दशहरा
11	जून	2003	बुधवार	निर्जला भीमशयनी एकादशी व्रत
14	जून	2003	शनिवार	पूर्णिमा सत्यनारायण व्रत
15	जून	2003	रविवार	मिथुन संक्रान्ति
17	जून	2003	मंगलवार	गणेश चतुर्थी व्रत
25	जून	2003	बुधवार	योगिनी एकादशी व्रत

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान द्वारा आयोजित सभी भक्तजनों के लिए

दोहा स्मरण प्रतियोगिता

नियम

- इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जाति वर्ग अथवा आयु वर्ग के भक्तजन भाग ले सकते हैं।
- प्रतियोगिता में ''साईं टेऊँराम अमृतवाणी'' (T-Series) कैसेट अथवा प्रतियोगिता फोल्डर से 70 दोहे 22 जून 2003 (रविवार) तक याद करके श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त साथ लिखे प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी सुना सकते हैं।
- दोहे याद करने के लिये साईं टेऊँराम अमृतवाणी (T-Series) कैसेट अथवा प्रेम प्रकाश सन्देश के मई अंक में प्रकाशित के माध्यम से याद करें।
- याद करके दोहे सुनाने वाले प्रतियोगी अपना पूरा नाम, आयु, पता व फोन नम्बर लिखवायें। प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सभी को सांत्वना पुरस्कार 5 जुलाई 2003 जन्मोत्सव पर दिये जायेंगे।
- दोहों को आसपास के क्षेत्र व पास पड़ौस में 11 भक्तजनों को याद करवाने वाले पुरुषार्थी भक्तजनों को भी ''विशेष पुरस्कार'' से सम्मानित किया जावेगा।
- दोहा स्मरण प्रतियोगिता में किसी भी आयु वर्ग जाति वर्ग एवं किसी भी शहर के व्यक्ति 70 दोहे याद करके विभिन्न शहरों के प्रेम प्रकाश आश्रम के सन्तजन व भक्तजन को अथवा श्री अमरापुर स्थान जयपुर में 22 जून 2003 रविवार से पूर्व आकर सुना सकते हैं।
- दोहों को अपने-अपने ढंग से स्वरबद्ध सुनाने वाले को प्रथम-द्वितीय-तृतीय तीनों वर्ग (बाल-युवा-वृद्ध) के अनुसार अलग-अलग पुरस्कार दिये जायेंगे और सभी को सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। स्वर टी-सीरीज कैसेट ''साईं टेऊंराम अमृतवाणी के माध्यम से सेट करें।

सुनाने के स्थान

1. संत नन्दलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार
2. संत लालूराम, प्रेम प्रकाश धाम, दिल्ली
3. संत श्यामलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा
4. संत शम्भूलाल, प्रेमप्रकाश आश्रम, इन्दौर
5. संत संजय, मीरा मन्दिर, बड़ौदा
6. रमेश राजपाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, सूरत
7. मोहन शिवनानी, प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर, अजमेर
8. महेन्द्र प्रेम प्रकाशी, सीकर
9. डॉ. कैलाश बदलानी, टोंक
10. भगवन्ती दीदी, प्रेम प्रकाश आश्रम, केदार नगर, आगरा
11. सांवल प्रेमप्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना
12. मीनू प्रेमप्रकाशी, प्रेम प्रकाश मन्दिर, हथीन
13. सन्त राजूराम प्रेम प्रकाश आश्रम, चित्तौड़गढ़
14. कार्यालय, प्रेमप्रकाश संदेश, प्रेमप्रकाश आश्रम, ग्वालियर
15. ताराचन्दजी 14/1022, हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर
16. श्री महादेव प्रेम प्रकाशी, प्रेमप्रकाश आश्रम, वाराणसी
17. संत जीतू प्रेमप्रकाशी, प्रेमप्रकाश आश्रम, गोंदिया

सुनाने की अंतिम तिथि

22 जून, 2003 (रविवार)

परिणाम

29 जून, 2003 (रविवार)

दोहा स्मरण प्रतियोगिता की अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

संत श्री मोनूराम जी 0141-2372423-24, 5107558

बी.डी. टेकवानी 0141-2250259

पुरस्कार वितरण : ५ जुलाई, २००३ (शनिवार), सद्‌गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस पर

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th)
भा.शा.रजि.–29/18/81-II

स्वामी हरिदास सन्देश

78. ''भगवान की माया बहुत कठिन, दुस्तर है। इसको पार करना बड़ा ही मुश्किल है। पर यह सरल व आसान कब होगी ?जब हम भगवान की शरण में चले जाएंगे।''

79. ''जीव का यह शरीर तत्वों से बना है। जिसका स्वभाव-नाशवान, अनित्य व विनाशी होता है। और यह आत्मा सत्य, नित्य, शाश्वत्, अनिवाशी व अचल होता है। तो फिर नाशवान के द्वारा अविनाशी तत्व को कैसे प्राप्त किया जाये ?कैसे पहुँचा जाये उस तत्व तक ? जब हम भक्ति करेंगे तब ही सम्भव है उसको प्राप्त करना।''

80. हमारे पूर्वज ही हमें 'आत्म-ज्ञान', 'ब्रह्म-ज्ञान' की अनुभूति के लिए रास्ता बतलाते हैं। हमें अपने जीवन में उन्हीं के द्वारा स्थापित परम्परा का ही अनुसरण करना चाहिए। यदि हम उनके द्वारा बनाये गये रास्ते पर न चलकर अपना बनायेंगे तो हमारा शरीर ही समाप्त हो जायेगा। तो फिर हम कब पहुँचेंगे ?''

81. ''आत्म-ज्ञान'', ''ब्रह्म-ज्ञान'' की अनुभूति के लिए हमें जिस मार्ग से जाना है उसकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ज्ञान, कर्म, ध्यान, भक्ति, योग, दान, सत्य, तपस्या, धर्म ये सब एक ही होते हैं अलग-अलग नहीं।''

82. ''साधु भी धर्म का ही रूप है। उसकी रक्षा हेतु भगवान स्वयं प्रकट होते हैं।'

प्रस्तुति : प्रीतम प्रेमप्रकाशी, जयपुर

सूचना



समस्त सम्माननीय सद... सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए।

व्यवस्थापक

सदस्यता क्रं.
श्रीमान
RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद खूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

सूचना

प्रेम प्रकाश सन्देश का जून अंक मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जन्मोत्सव अवसर पर आचार्य श्री की पावन पुण्य स्मृति को समर्पित होगा।

अतः श्री सन्त प्रवर, रचनाकार, लेखक, कवि व भक्तजनों से निवेदन है कि आचार्य श्री से सम्बन्धित संस्मरण घटनायें, स्वप्निल दर्शन, बड़े बुजुर्गों द्वारा सुना वृत्तान्त, दोहे, भजन इत्यादि ३० मई के पूर्व कार्यालय को सुन्दर लिखावट में लिखकर अथवा कम्प्यूटराईज्ड करवा कर भेजें।

भेजने का पता : सम्पादक प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 2454183